Fortnightly per copy Rs. 12/- only

ओ३म्

3rd September 2017

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

हैदराबाद मुक्ति संघर्ष के आंदोलनकारियों व बलिदानियों को नमन

इस भवन में निजाम ने समर्पण दस्तावेज पर हस्ताक्षर किया

उरूज पर नसीब था तो छू रहा था आसमाँ,
बिगड़ गया नसीब तो जमीन से भी खिसक गया ।

स्व. लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के उद्‌गार...
"आर्य समाज यदि पहले से भूमिका तैयार न की होती तो तीन दिन में हैदराबाद में पुलिस एक्शन सफल नहीं हो सकता था ।

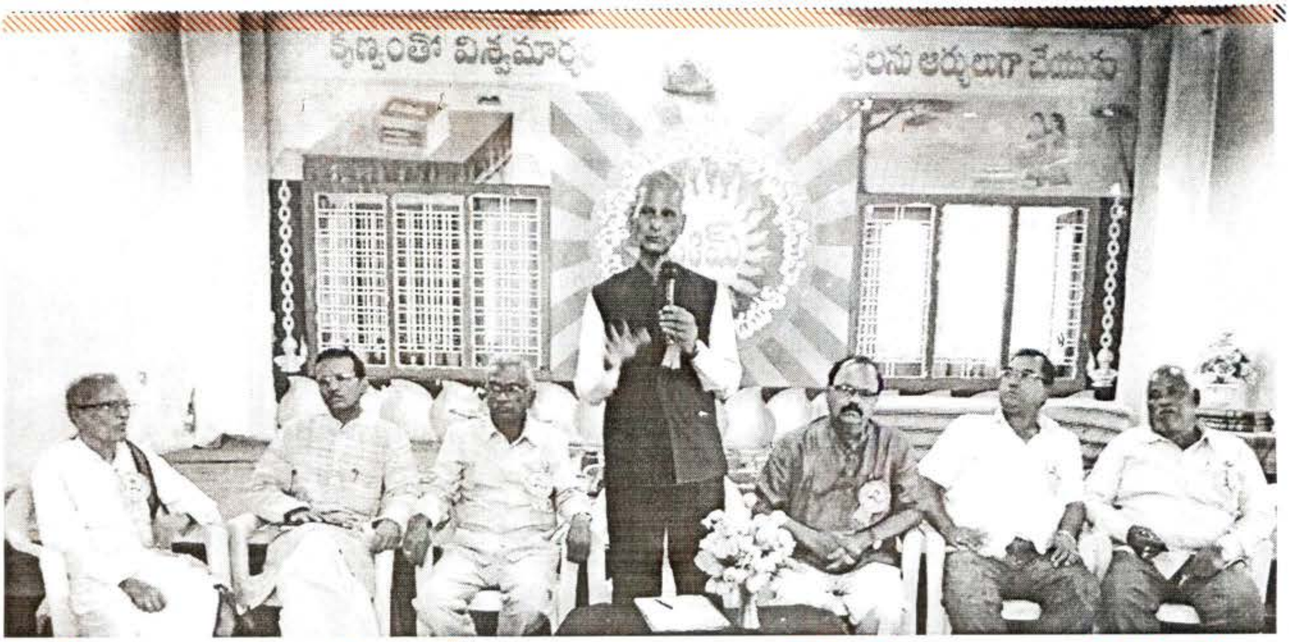

आर्य समाज महबूबनगर के श्रावणी समापन पर ठा. लक्ष्मण सिंह जी, सभा प्रधान पर्व संदेश देते हुए

आर्य समाज नारायणपेट में श्रावणी पर्व सम्पन्न करते हुए पं. प्रियदत्त जी शास्त्री में

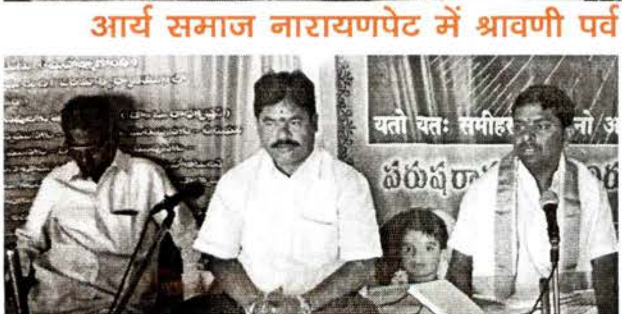

आर्य समाज चौधरगुड़ा व उटकूर में श्रावणी पर्व समापन पर आचार्य विश्वश्रवा जी

कतरे को आंखों में तूफान कर दिया

-प्रभात कुमार रॉय

अलीसरदार जाफरी ने गदर पार्टी का अनुपम प्रशंसा करतेहुए वे शानदार पक्रियां लिखी...

गदर पार्टी ने तो इक नयी रूह फूंखकर
आजादी-ए-दयात का सामान कर दिया
शेख और बिरहमन में बढ़ाया इतना इतिहाद
गोया कि उन्हें दो कालिय-ओ-वकजां कर दिया
जुल्मो-सितम की नाव डूबोने के वास्ते
कतरे को आंखों में तूफान कर दिया

गदर पार्टी का क्रांतिकारी इतिहास वस्तुतः भारत की जंग-ए-आजादी के दौर का एक ऐसा स्वर्णिम दस्तावेज है, जिसे दुर्भाग्यवश आधुनिक भारत के इतिहास में वयोचित स्थान प्रदान नहीं किया गया है । आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के उलजन में धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक विचारधारा के संस्थापन में गदर पार्टी ने अविस्मरणीय और पर ऐतिहासिक क्रांतिकारी भूमिका का शानदार निर्वहन किया । गदर पार्टी के ऐतिहासिक सशस्त्र संग्राम की पृष्ठभूमि का निर्माण करने में शकमजी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, मैडम भीखइजी कामा और मोहम्मद बरकतुल्ला सरीखे अनेक महान क्रांतिकारियों का शानदार योगदान रहा । क्रांतिकारी लाला हरदयाल के अमेरिका आगमन के पश्चात भारतीय क्रांतिकारियों की सक्रियता में बहुत तेजी आ गई । लाल हरदयाल के रूप में अमेरिका में भारतीय क्रांतिकारियों की एक ऐसा प्रणेता मिल गया जो कि विलक्षण तौर पर अत्यंत बुद्धिमान होने के साथ ही साथ अत्यंत सक्रिय क्रांतिकारी तथा अमेरिका के प्रायः सभी प्रवासी भारतीयों और पंजाबी मेहनतकशों के साथ धनिष्ठ तौर पर संवह था । क्रांतिकारी तारकनाथ दास द्वारा प्रकाशित पत्रिका इंडियन सोशियोलाजिस्ट, अमेरिका और कनाडा के प्रवासी भारतीयों के मध्य बहुत लोकप्रिय हो रही थी ।

क्रांतिकारी लाला हरदयाल को अमेरिका में अनेक अत्यंत प्रतिभाशाली शिष्य मिल गए। करतार सिंह सवमा और विष्णु गणेश पिंमले, पीएस खानकोजे, चंपकरण पिल्लई और काशीनाथ इत्यादि प्रमुख थे । पीएस खानकोजे हिंदुस्तान एसोसिएशन ऑफ पेसेफिक कोस्ट की बुनियाद रखने वाले भारतीयों में अग्रणी था । अन्य भारतीयों की तरह की करतारसिंह सराभा, काशीनाथ और विष्णुगणेश पिंगले ने भी भारत को आजाद कराने की भायना वलयतौ होने लगी थी । यही वह वक्त का जब करतार सिंह सराभा की मुलाक़ात लाला हरदयाल के साथ हुई । दिसंबर १९१२ में स्टैंफर्ड यूनिवर्सिटी में पिलॉसफी के प्राध्यापक लाला हरदयाल बकले यूनिवर्सिटी के खत्रों को संवोधित करने के लिए पधारे थे । लाला जी ने नौजावानों को ललकारते हुए संबोधित किया कि ये इँजीनियर, डॉक्र अथवा अफसर बनने के स्थान पर वतनपरस्त बहादुर और वलिदानी क्रांतिकारी बनें । उन्होंने कहा कि अंग्रेजो राज के जूते तले गुलाम रहने से हजार गुना येहतर होगा वतन की आजादी के लिए लड़ते हुए मौत का आलिंगन करना । करतार सिंह सराभा एवं अन्य सात क्रांतिकारी खतों ने लाला हरदयाल की इस चुनौतीपू?र्ण ललकार को स्वीकार किया । इन सभी ने मिलकर चर्फने युनिवर्सिटी में नालंदा छात्रावास की नींद रखी । करतारसिंह सराभा ने अमेरिका में प्रवासी भारतीय ग्रामिकों को संगठित करने के लिए कारखानों और खेत खरिनयानो के जबरदस्त दौरे किए । १९१३ में अमेरिका सैनफ्रांसिस्कों शहर में गदर पार्टी युगांतर आश्रम गदर पार्टी का मुख्यालय बनाकर गदर पार्टी की बाकायदा स्थापना की । सोहन सिंह भाखना को गदर पार्टी का प्रथम अध्यक्ष बनाया गया । 'हिंद एसोसिएशन आफ पेसिफिक कोस्ट' का गथावत तौर पर गदर पार्टी में विलब कर दिया गया । अमेरिका के सेनफ्रांसिसको शहर में स्थित गदर पार्टी मुख्यालय को आजकल 'गदर पार्टी मेमोरियल' बना दिया गया है ।

दुनिया में संघर्ष का शंखनाद करके गदर पार्टी ने सशस्त्र संग्राम द्वारा ब्रिटिशराज से भारत को मुक्ति दिलाने की तैयारियां प्रारम्भ कर दी

गदर पार्टी ने संपूर्ण आजादी हासिल करने के लिए ब्रिटिश हुकूमत को उत्साह फेंकने का संकल्प लिया । एक नवंबर १९१३ को गदर पार्टी के 'गदर' नामक मुख्य अखबार का प्रकाशन अंग्रेजी, हिंदी, गुरुमुखी और उर्दू में शुरू किया गया । प्रथम अंक की शुरुआत में लिखा गया- हमारा नाम क्या है- गदर, हमारा काम क्या है- गदर करना, गदर कहां होगा- भारत में । एक तरफ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारत के लिए ब्रिटिश राज के तहत डेमिनियन स्टेट्स का दर्जा प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया हुआ था तो दूसरी तरफ सारी दुनिया में संघर्ष का शंखनाद करके गदर पार्टी ने सशस्त्र संग्राम द्वारा ब्रिटिश राज से भारत को मुक्ति दिलाने की तैयारियां प्रारम्भ कर दी । प्रथम विश्वबुद्ध के खूनी बादल सारी दुनिया पर मंडराने लगे थे । जर्मन राष्ट्र जो कि इंग्लैंड का शत्रु राष्ट्र था, उससे गदर पार्टी ने अपने सशस्त्र संग्राम में मदद लेने का प्रयास किया । भारत में अंग्रेजी राज पुस्तक के लेखक प्रख्यात मांचीवादी पं. सुंदरलाल स्वयं एक सशस्त्र क्रांतिकारी के रूप में गदर पार्टी से बनारस में संवद्ध हुए थे । उनकी प्रखर लेखनी ने १९१४-१५ में भारत की सरजममों पर गदर पार्टी के सशस्त्र क्रांति के प्रयास और भारत की आजादी के लिए गदर पार्टी के क्रांतिकारियों के अनुपम बलिदानों का सजीव वर्णन किया है । लाला हरदयाल के साथ पं. सुंदरलाल ने समस्त उत्तर भारत का दौरा किया था । १९१४ में सचींन्द्रनाथ सान्याल और पंस सुंदरलाल एक ब्रम परीक्षण में गंभीर रूप से जखमी हुए थे ।

गदर पार्टी ने तकरीबन नौ हजार सिख प्रकास्तियों को सशस्त्र क्रांति में शिरकत करने के लिए अमेरिका और कनाडा से कलकत्ता भेजा, जिनको गदर पार्टी से जुड़े युगान्तर और अनुशीलन दल के क्रांतिकारियों

क्रमशः पृ.७ पर

आचार्य हमें मानव-हितैषी बनाए

-महात्मा चैतन्यमुनि

इस संसार में दूसरों का हित करने में लगे रहने वाले व्यक्ति ही श्रेष्ठ माने जाते है । यही धर्म का भी वास्तविक एवं व्यवहारिक स्वरूप है । गोस्वामी तुलसीदासजी का कथन है- **परहित सरस धर्म नहिं भाई । परपीडा सम नहिं अधमाई ।।** अर्थात् दूसरे का उपकार करने के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों की पीड़ा देने के समान कोई अधर्म नहीं है । इस सम्बन्ध में महाभारतकार ने बहुत ही सुन्दर कहा है-

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं चाप्यव धार्मताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।।

अर्थात् हे संसार के लोगो ! तुम धर्म का सार सुनो, सुनकर उसी के अनकूल आचरण करो । धर्म का सार यह है कि जो अपने प्रतिकूल आचरण है अर्थात् जो व्यवहार आप अपने सात कराने को तैयार नहीं है, वह दूसरों के साथ भी मत करो... और जैसा व्यवहार दूसरों से तुम अपने प्रति चाहते हो वैसा ही व्यवहार तुम दूसरों के साथ करो...। मगर दूसरे का हित वह तभी कर सकेगा यदि उसमें मानवीय गुण प्रचुर मात्रा में हो । सच्चा मानव बनने की शिक्षा प्राप्त करने के लिए किसी योग्य आचार्य की आवश्यकता होती है । वेद में ज्ञान देने वाले आचार्य के सम्बन्ध में कहा गया है कि-

उत्तिष्ठ ब्रम्हणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे । उप प्र यन्तु मरूतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा ।। (ऋ० १-४०-१), **प्रैतु ब्रम्णस्पतिः प्र देव्येतु सुनृता । अच्छा वीरं र्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ।।** ऋ० १-४०-३), **प्र नूनं ब्रम्हणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युकथ्यम् । यस्मिन्निन्द्रो वरूणो मित्रो अर्यमा देवा ओकांसि चकिरे ।।** (ऋ० १-४०-५) आचार्य क्रियाशील, अज्ञानान्धकार को नष्ट करनेवाला, जितेन्द्रिय, सदा विद्यार्थी के साथ रहने वाला और विद्यार्थी के व्यसनों को दूर करने वाला हो । हमें ऐसा आचार्य अंतिप्रिय हो जो हमारी वाणी को शुभ एवं सत्य से परिपूर्ण करे, हमें लोकहितकारी, वीर तथा यज्ञशील बनाए । हमें वेद-मन्त्रों का ज्ञान दे जिससे हम सबके साथ स्नेह करने वाले, दान देने वाले और द्वैष भावना का त्याग करनेवाले बनें... यजुर्वेद में आचार्य-आश्रम के प्रसंग में कहा गया है-

रेवती रमध्वं बृस्पते धारया वसूनि । ऋतस्य त्वा देवहविः पाशेन प्रतिमुञ्चामि धर्षा मानुषः ।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेशिवनो बाहुभ्यां पूण्णो हस्ताभ्याम् । अग्नीषोमाभ्यां जुष्टं नियुनजिम ।

अद्भ्यस्त्वौषधीभयोनु त्वा माता मान्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्योनु सखा सयूथ्यः । अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ।

(जयु० ६-८-९)

आश्रम वह है जहां गौवें रमण कर रही हों । जहां ऐसा आचार्य हो जो आश्रमवासियों में **(वसूनि धारय)** उत्तम निवास के कारणभूत ज्ञानों का धारण कराने वाला हो । वह **(देवहविः)** देवताओं के लिए देकर यज्ञशेष को खानेवाला हो । **(ऋतस्य पाशेन)** अपने शिष्यों को ऋत् के पाश से **(प्रतिमुंचामि)** बान्धने वाला हो । उन्हें **(धर्षा)** वासनाओं का धर्षण करने वाला बनाए और **(मानुषः)** मानवमात्र का हित करने वाला बनाए... अगले मन्त्र की संगति आचार्य के साथ लगाएँ तो आगे बताया गया कि जैसा वह आचार्य स्वयं है वैसा ही वह अपने शिष्य को बनाता है- **देवस्य सवितुः प्रसवे)**

सवितादेव की अनुज्ञा में मै **(त्वा)** तुझे ग्रहण करता हूँ **(अश्विनोःबाहुभ्याम्)** प्राणापान के प्रयत्न से मैं वस्तुओं का ग्रहण करता हूँ । **(पूण्णः हस्ताभ्याम्)** पूषा के हाथों से अर्थात् पोषण के दृष्टिकोण से ही मैं प्रत्येक वस्तु को लेता हूँ, **(अग्निषोमाभ्याम्)** तेजस्विता व शान्ति से **(जुष्टम्)** प्रीतिपूर्वक सेवित तुझे मैं **(नियुनज्मि)** अपने प्रतिनिधि के रूप से नियुक्त करता हूँ, लोकहित के कार्यों को करने में तू मेरा निमित्त बनता है । **(अद्भ्यः त्वा ओषधीभ्यः)** मैं तुझे जलों व ओषधियों के लिए नियुक्त करता हूँ इस सात्विक मार्ग पर चलने के लिए **(त्वा)** तुझे **(माता अनुमन्यताम्, पिता अनुमन्यताम् सगभर्यः भ्राता अनुमन्यताम् सयूथ्यः सखा अनुमन्यताम्)** माता अनुमति दे, पिता भी अनुमति दे, सहोदर भाई अनुमति दे तेरे सभी सखा भी अनुमति दें अर्थात् इस परहित के मार्ग पर ये सभी तेरे सहायक हों । **(अग्निषोमाभ्याम्)** तेजिस्विता और शान्ति से **(जुष्टम्)** सेवित **(त्वा)** तुझे **(प्रोक्षामि)** मै ज्ञान से सिक्त करता हूँ वा लोकहित के कार्य के लिए अभिषिक्त करता हूँ । इसी अध्याय के एक मन्त्र में दिव्य िवन बनाने के लिए आचार्यो से प्रार्थना करते है-

देवीरापः शुद्ध वोढध्यम् सुपरिविष्टा देवेपु ।
सुपरिविष्टा वयं परिवेष्टारो भूयास्म ।।

(यजु. ६-१३)

(देवीः) ज्ञान की ज्योति से चमकनेवाले **(आपः)** रेतस् के पुंजा वा आप्त **(शुद्धाः)** शुद्ध मनोवृत्तिवाले आचार्यो ! **(वोड्ढ्वम्)** आप इन विद्यार्थियों को अपने समीप लाइए, उनका उपनयन कीजिए । ये विद्यार्थी **(सुपरिविष्टाः)** सुपरिविष्ट हों अर्थात् इन्हें आपके द्वारा ज्ञान का भोजन उत्तमता से परोसा जाए **(देवेषु)** विद्वान् आचार्यों के समीप **(सुपरिविष्टाः)** खूब उत्तमता से परोसे हुए ज्ञान को, अर्थात् आचार्यो के समीप रहकर सब प्राकृतिक देवों से सम्बन्धित ज्ञान को प्राप्त करने वाले **(वयम्)** हम **(परिवेष्टारः)** इस ज्ञान के भोजन के परोसने वाले **(भूयास्म)** बनें । आचार्य का शिष्य ज्ञान प्राप्त करके उस ज्ञान को औरों तक पहुंचाने वाला बनें ।

वह आचार्य अपने शिष्यों का शोधन किस प्रकार करता है इस सम्बन्ध में अगले मन्त्र में कहा गया है- **वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि स्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेढ़ं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि ।।** (यजु०६-१४) आचार्य विद्यार्थी से कहता है कि **(ते वाचं शुन्धामि)** मैं तेरी वाणी को शुद्ध करता हूँ, जिससे तू इस वाणी को असत्यभाषण से अपवित्र करने वाला न हो । तेरी वाणी सत्य से सदा पवित्र बनी रहे । **(ते प्राणं शुन्धामि)** मैं तेरी घ्राणेन्द्रिय को शुद्ध करता हूँ जिससे तू घ्राणेन्द्रिय से कृत्रिम गन्धों के प्रति आसक्त न हो जाए । **(ते चक्षुः शुन्धामि)** तेरी आंख को शुद्ध करता हूँ, जिससे तू पवित्र देखनेवाला बने । **(ते श्रोत्रं शुन्धामि)** तेरे कान को शुद्ध करता हूँ, जिससे तू इन कानों से अभद्र बातों को न सुनता रहे और न ही परनिन्दा आदि में स्वाद लेता रहे... **(नाभिं ते शुन्धामि)** मै तेरी नाभि को पवित्र करता हूँ, जिससे तेरा जीवन सयंम के बन्धन में बन्धकर चले । **(ते मेढ़ं शुन्धामि)** तेरी उपस्थेन्द्रिय को शुद्ध करता हूँ, जिससे तू ब्रह्मचर्य का जीवन बिताते हुए मूत्र-सम्बन्धी समस्त रोगों से बचा रहे.., **(ते पायुं शुन्धामि)** तेरी मल-शोधक इन्द्रिय को शुद्ध करताहूँ, जिससे ठीक मलशोधन होते रहकर तू रोगों से बचा रहे । (ते चरित्रान् शुन्धामि) तेरे पावों को शुद्ध करता हूँ, जिससे तेरे चरित्र सदा ठीक बने रहें । जो शिष्य अपने आचार्य के सन्निध्य में रहकर इस प्रकार से पवित्र होकर निकलेगा वही वास्तव में मन, वचन व कर्म से मानव हितैषी बन सकता है....

संसार के तीन प्रकार के शत्रु

पण्डित बुद्धदेव जी विद्यालंकार

हमारे एक प्रकार के शत्रु आधिदैविक विपत्तियाँ हैं, जैसे अतिवृष्टि, अनावृष्टि और भूकम्प आदि । इनसे हम दो प्रकार से युद्ध कर सकते हैं

१) उत्तम आचरणों द्वारा ।

२) ईश्वराराधना द्वारा ।

यहाँ उत्तम आचरणों से अभिप्राय इन विपत्तियों का यथा शक्ति प्रतिकार करने से है । जैसे बांधों द्वारा अतिवृष्टि का नहरों द्वारा अनावृष्टि का । विसेष प्रकार के घर बनाकर भूकम्प का प्रतिकार करना । ये सब उत्तम आचरण है ।

आधिदैविक विपत्तियों के हमारे सब प्रतीकार पहले उपाय के बिना अधूरे हैं, यह हमें कभी नहीं भुलाना चाहिये ।

मानव जाति के दूसरे शत्रु आदिभौतिक हैं । सर्प, बिच्छू, मच्छर, टिड्डी आदि प्राणियों तथा डाका युद्ध आदि परस्पर के कलह से जो कष्ट हमें पहुंचते हैं वे हमारे आदिभौतिक शत्रु हैं । इनका भी उपाय मानव जाति की सम्मिलित शक्ति से इनका प्रतिकार करना ही है । वह प्रतिकार दो प्रकार का है

१) इन विध्वंसक शक्तियों को यथासम्भव उपकारी बनाना और

२) यदि ऐसा न हो सके तो इनका विध्वंस कर डालना ।

हमारे तीसरे शत्रु आध्यात्मिक हैं । आधिदैविक तथा आधिभौतिक दोनों प्रकार के दुख अन्ततोगत्वा हमारे आध्यात्मिक शत्रुओं के ही खेल हैं । इससे पहले कि हम शत्रुओं से लड़ने के लिए मानव राष्ट्र को संगठित करने का विचार करें । यह आवश्यक है कि हम यह जानें कि यह आध्यात्मिक शत्रु कौन-से हैं और किस प्रकार आक्रमण करते हैं ।

संसार के पांच आध्यात्मिक शत्रु हैं

(क) अज्ञान, (ख) स्वार्थ, (ग) विक्रोश, (घ) आलस्य, (ङ) अभाव ।

अज्ञान

भगवान वेद व्यास ने गीता में कहा है **"न हि ज्ञानेन सदृशम् पवित्रमिह विद्यते ।"** अर्थात् ज्ञान के सदृश पवित्र वस्तु संसार में दूसरी नहीं है । इससे स्पष्ट है कि अज्ञान के समान अपवित्र वस्तु भी दूसरी नहीं है । मैं अज्ञान को सबसे बड़ा शत्रु इसलिए कहता हूँ कि यह संसार के हितैपियों के हाथ से भी संसार का अहित करवा डालता है । जो लोग स्वभाव से दुष्ट है । जिन्हें पर पीड़ा में निष्कारण आनन्द आता है अथवा जो स्वार्थवश दूसरों के हित का नाश करते हैं, उनके हाथों संसार का अनिष्ट होना तो बिल्कुल स्वाभाविक ही है । किन्तु अज्ञान से तो हित चाहने वाले भी, अपनी समझ में हित करते हैं ऐसा समझते हुए भी अहित कर बैठते है अथवा समस्या उपस्थित होने पर कि कर्त्तव्य विमूढ़ होकर विवश हो बैठे रहते है । जिन मनुष्यों ने सत्य का प्रकाश करने वाले विज्ञानवेत्ताओं को धमकाया, सताया और जीते-जी जला तक दिया वे अपनी समझ में संसार और स्वयं विज्ञानवेताओं दोनों का हित ही साध रहे थे । जव तक रेलगाड़ी और वायुयान का आविष्कार न हुआ था मनुष्य दूर देशस्थ मनुष्यों का हित चाहते हुएभी विवश थे । इन सारे दुःखों का कारण था अज्ञान ।

मनुष्य को केवल विचारों के प्रकाश मात्र के लिए दण्ड नहीं देना चाहिए । क्योंकि न जाने जिन विचारों को हम आज सर्वथा सत्य समझते हैं कल उनमें कुछ परिवर्तन हो जाये यह विचार स्वातन्त्र्य की भावना कोई गहरा सत्य नहीं है किन्तु इतने से सत्य के यथार्थ ज्ञान के न होने से कितने पूजा के योग्य महापुरुषों को बलिदान किया गया । जव इस पर विचार करते हैं तो आश्चर्य होता है । डेगची से ढक्कन उछलते किसने नहीं देखा ? किन्तु इतनी सी बात के पूर्ण परिणाम क्या हैं । इसी बात के ज्ञान ने मानव जाति के इतिहास में कैसा विशाल परिवर्तन कर डाला । जव यह विचारते हैं तो कहना पड़ता है कि तिनके की ओट पहाड़ छिपा पड़ा था । इसीलिए चरक महाराज के स्वर में स्वर मिलाकर कहना पड़ता है कि **"प्रजापराधो मूलं सर्वरोगाणाम्"** अर्थात् समझ का दोष सब रोगों की जड़ है ।"

इस समय मानव-जाति के संगठन के सम्वन्ध में जो अज्ञान फैला हुआ है । आज का एक साधारण-सी सामाजिक उन्नति की बातों को लोक-व्यवहार तक पहुंचाने में जितना श्रम का व्यय हुआ है और जितना अभी शेष है, उसे देखकर तो और भी आश्चर्य हता है । जो साधारण सी भूलें हम एक छोटे से परिवार के सम्वन्ध में होना सहन नहीं कर सकते वे ही सारे मानव समाज को दुख दे रही हैं । यह देखकर किसे आश्चर्य न होगा ।

स्वार्थ

संसार का दूसरा शत्रु स्वार्थ अथवा तृष्णा है । यों तो महात्माओं को छोड़कर साधारण मनुष्य-मात्र स्वार्थ और प्रेम के मेल का परिणाम है । किन्तु कई मनुष्यों में यह स्वार्थ असाधारण मात्रा में पाया जाता है । भर्तृहरि जी ने मानव समाज के बड़े सुन्दर विभाग किए हैं । वे लिखते हैं

एक ते पुरुषाः परार्थ घटकाः स्वार्थ विनिघ्नन्ति ये,

सामान्यास्तु परार्थद्यमभृतः स्वार्था विरोचेन ये ।

तेपि मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये,

ये निघ्नन्ति निरर्थकम् पहितं ते के न जानीमहे ॥

अर्थात् इस संसार में ४ प्रकार के मनुष्य हैं

१) वे महात्मा लोग जो अपने स्वार्थ का त्याग करके दूसरों का हित करते हैं ।

२) वे लोग जो यदि उनके स्वार्थ को हानि

न पहुंचती हो तो यथाशक्ति परोपकार भी करते हैं । संसार में सब से अधिक संख्या इन्हीं लोगों की है ।

३) वे लोग जो स्वार्थ के लिये दूसरों के स्वार्थ का नाश करते हैं ।

४) वे लोग जो ठीक उसी प्रकार निष्काम भाव से दूसरों की हानि करते हैं जिस प्रकार निष्काम भाव से महात्मा लोग दूसरों का हित करते हैं । भर्तृहरि जी कहते हैं कि इनका नाम क्या धरूँ यह समझ में नहीं आता ।

स्वार्थ मनुष्य को राक्षस बना देता है । यह काम, लोभ, मोह और अभिमान के रूप में प्रगट होता है । इनमें काम और लोभ मुख्य हैं ।

विक्रोश

मनुष्य-जाति का तीसरा शत्रु है । यह वह दुर्गुण है जिसके कारण वे मनुष्य उत्पन्न होते हैं जिन्हें भर्तृहरि जी ने चौथी श्रेणी में रखा है । कई मनुष्यों में दूसरों के दुख में आनन्द लेने की स्वाभाविक दुष्प्रवृत्ति होती है । वह काम, क्रोध, लोभ आदि किसी भी कारण से नहीं, किन्तु निष्कारण दूसरों को पीड़ा देते हैं । उनके हृदय में जो स्वाभाविक विध्वंसकारिणी प्रवृत्ति होती है उसे हमने अनुक्रोश के उल्टे विक्रोश का नाम दिया है ।

वस्तुतः देखा जाये तो स्वार्थ और विक्रोश का मूल भी अज्ञान है । यदि इन मनुष्यों को अपने कर्मों के फल का पूर्णरुपेण ज्ञान हो जाये तो ये ऐसा कभी न करें । पूर्ण ज्ञान से हमारा तात्पर्य है कि उन्हें साक्षात्कार हो जाये क्योंकि उपदेश मात्र से ज्ञान तो सबको मिल ही जाता है ।

आलस्य

मानव-समाज का चौथा शत्रु आलस्य है । इसे हमने स्वार्थ तथा विक्रोश से पृथक् इसलिये रखा है क्योंकि यह बहुधा धर्मात्मा मनुष्यों में भी पाया जाता है । यह वही वस्तु है जिसे गीता में

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्व देहिनाम्।
प्रमादालस्य निद्राभिस्तन्निवघ्नाति भारत।।
गीता १३ । ६ ।।

के नाम से याद किया है । बहुत से मनुष्य ऐसे पाये जाते हैं जो संचित धन में सहस्त्रों दान करते हैं परन्तु स्वयं कुछ कार्य नहीं करते । उनमें पराये दुख में समवेदना पाई जाती है । वे दान भी करते हैं इसलिये उन्हें स्वार्थी नहीं कह सकते । इनका दोष आलस्य है । संसार में किसी को ''दुःख न देना'' इतने मात्र से मानव-जाति का कल्याण नहीं हो सकता । प्रत्येक मनुष्य को कुछ न कुछ 'देना' भी चाहिए । किन्तु भारतवर्ष में तो बहुत से धार्मिक सम्प्रदाय तक ऐसे हैं जो दुःख न देने मात्र में धर्म की इति श्री समझते हैं । उनका कहना है

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम ।
दास मलूका कह गये, सब के दाता राम ।।

ऐसे मनुष्य सचमुच अजगर की तरह चुपचाप पड़े रहते हैं । अजगर तो किसी को दुख भी देता है परन्तु वे किसी को दुख नहीं देते । किन्तु ऐसे मनुष्यों से भी मानव-समाज का हित नहीं हो सकता । इसलिये हमने आलस्य को मानव-समाज का चौथा शत्रु माना है ।

वेद में इस पुरुषार्थ की क्रिया को सवन (Setiaefim) के नाम से पुकारा गया है अर्थात् हर एक मनुष्य का धर्म है कि वह किसी न किसी पदार्थ में से सार को खींच लें । किसान बीज को साधन बनाकर धरती में से अन्न सवन करता है । बढ़ई अपने यन्त्रों से लकड़ी में से उपकरणों का सवन करता है । रसायन शास्त्र का विद्वान् पदार्थों में से उनके परस्पर सम्बन्ध की विद्या के तत्त्वों का सवन करता है और फिर वे सब इन सवनों के परिणाम सोमों को भगवान् की भेंट करते हैं । जो सवन नहीं करते प्रभु के प्यारे नहीं हैं । वेद में कहा है 'यः सुन्वतः सखा तस्या इन्द्राय गायत' (ब्र. १।४।१०) अर्थात् जो 'सवन करने वालों का सखा है उस इन्द्र के (परमात्मा वा राजा के गीत गाओ ।

अत) आलस्य सवन का उलटा है । यह भी मानव जाति का महा शत्रु है ।

अभाव

मानव-जाति का पांचवां शत्रु अभाव है । वस्तुतः सोचें तो इसका भी मूल अज्ञान है । किन्तु यह उन मनुष्यों से भी पाप करवाता है जो स्वभाव से दुष्ट अथवा आलसी नहीं है । उदाहरण के लिये किसी देश में दुर्भिक्ष आ पड़े तो वहां अच्छे पुरुषों को भी अपना आप सम्भालना कठिन हो जाता है । किसी ने क्या अच्छा कहा है

'बुभुक्षितः किन्न करोति पापम् ।
क्षीणा नरा निष्करुण भवन्ति ।।'

अर्थात् भूखा आदमी कौन-सा पाप नहीं कर डालता । भूखे लोग निर्दयी हुआ करते हैं । यह अभाव दो कारणों से उत्पन्न होता है

१) उपभोग्य वस्तुओं के ह्रास से ।

२) उपभोक्ताओं की अतिवृद्धि से ।

ज्ञानी मनुष्य इन दोनों विपत्तियों का उपाय पहले से सोचकर इनका प्रतीकार करते हैं । इसीलिये हम कहते हैं कि मानव जाति का सबसे बड़ा शत्रु 'अज्ञान' है ।

जानवरों की कुर्बानी से परहेज करें मुसलमान : राष्ट्रीय मुस्लिम मंच

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुडे राष्ट्रीय मुस्लिम मंच ने ईदउज्जुहा (बकरीद) में जानवरों की कुर्बानी नहीं करने की अपील की है । राष्ट्रीय मुस्लिम मंच के संयोजक रईस खान ने आज यहां कहा कि किसी जानवर की कुर्बानी देने के बजाय केक काटकर त्यौहार की खुशियां मनायी जानी चाहिये । उनका कहना था कि कुर्बानी तो मातम का प्रतीक है जबकि त्यौहार खुशियां लेकर आते हैं, इसलिये केक काटकर बकरीद मनायी जानी चाहिये । श्री खान ने कहा कि पशु पक्षी, पेड पौधे सभी अल्लाह की रहमत हैं । उन पर सभी को रहमत करनी चाहिये । उनका दावा था कि हज के अलावा अन्य स्थान पर किसी नवी ने भी कुर्बानी नहीं की है तो लोग क्यों इस तरह के काम करते हैं । उनका कहना था कि उनके परिवार में कुर्बानी की कोई परम्परा नहीं है । उनके माता-पिता अव इस दुनिया में नहीं है । अपने जीवन में उन्होंने कोई कुर्बानी नहीं दी थी, क्योंकि उनका और कुर्बानी नहीं दी जानी चाहिये । उन्होंने कहा कि धर्म की सही जानकारी रखने वाला हज के अलावा कहीं और जानवरों की कुर्बानी देगा ही नहीं । उन्होंने मुस्लिम धर्मगुरुओं से अपील की कि वे समाज को सही रास्ता दिखायें ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दृष्टि में आदर्श गृहस्थ

- डॉ. विनय विद्यालंकार

जब से धरा पर जीवन है तब से मनुष्य समाज का अस्तित्व है और तभी से मनुष्य के मार्गदर्शक ज्ञानस्त्रोत वेदों का भी अस्त्वि है। वेद समस्त ज्ञान विज्ञान के स्रोत है, तथा उस ज्ञान का अदिस्त्रोत या आदिमूल ईश्वर ही है। वेद ज्ञान के आलोक में मनुष्य ने अपने जीवन को व्यविस्थत स्वरूप प्रदान किया। व्यवस्थित ीव शैली के लिए सर्व प्रथम मनुष्य को दो या चार अपने जैसे विचारशील साथियों की आवश्यकता का अनुभव हुआ, यही अभिलाषा 'परिवार' नामक संस्था की जन्मदात्री है। एकात्री जीवन न सुखी हो सकता है और न व्यवसस्थित। जिस प्रकार अकेला पुरुष व अकेली स्त्री संतोष जनक सुखी व हार्षित जीवन की कल्पना नही कर सकते, उसी प्रकार दो या चार व्यक्तियों से बना कोई परिवार तब तक व्यवस्थित नहीं कहलाएगा जव तक कि वैसे कुछ परिवार मिलकर समाज नहीं बना लेते। वेद वर्णित समाज सुव्यवस्थित एवं हर्षित परिवारों का समूह है।

सृष्टि के आदि से चली आ रही यह व्यवस्था पाँच हजार वर्ष पूर्व छिन्न-भिन्न हुई और महाभारत जैसे युद्ध की दशा झेलनी पड़ी। महाभारत युद्ध में जहाँ असंख्य जनहानि हुई वहीं त्याग, समर्पण, प्रेम, परस्पर सहयोग की भावना आदि की भी हत्या हुई। व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति अहंकार तुष्टि हेतु जीवन के नैतिक मूल्यों व आदर्शों का ह्रास हुआ परिणामस्वरूप समाज व्यवस्था व आदर्श परिवार व्यवस्था पर संकट आ गया। हजारों वर्ष तक यह घोर अन्धकार जो वेद ज्योति के अभाव में अपना आधिक्य जमाये रहा उसे दूर करने वाला सूर्य गुरात की पावनभूमि टंकारा से उदय हुआ जिससे पुनः वेद ज्योति से गहतिमिर का नाश किया। वे थे **महर्षि दयानन्द सरस्वती।**

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुष्यमात्र के उत्कर्ष हेतु प्रत्येक क्षेत्र में वेद व वेद से अनुप्राणित साहित्य जो आर्ष था, आप्त पुरुषों द्वारा जिसका प्रणयन किया गया था, उसके उच चकाटि के विचार पक्ष को अपने व्याख्यानों, शास्त्रार्थो तथा ग्रन्थों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

ऋषिवर ने व्यक्तिनिर्माण की प्रक्रिया का आधार परिवार को मानते हुए सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास के प्रारम्भ ही शतपथ ब्राह्मण की उस उक्ति से किया जिसमें मनुष्य किसे माना जाय ? वही मनुष्य है अथवा उसे ही मनुष्य मानना चाहिए जो धार्मिक विदुषी प्रशस्ता माता वाला है अथवा धार्मिक विद्वान् व मार्गप्रशस्त करने वाले पिता वाला हो, जिसकी शिक्षा आचरण का शोधन करने वाले आचार्य के सान्निध्य में हो-

'मातृमान् पितृतानाचार्यवान् पुरुषा वेद'

-शतपथ ब्राह्मण

परिवार इकाई में माता-पिता का शिक्षित धार्मिक व जीवन विज्ञान का ज्ञाता होना प्रथम आवश्यकता है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश से पूर्व कन्या तथा वर वेद को साङ्गोपाङ्ग पढ़ के ब्रह्मचर्य को खण्डित किये बिना रहना चाहिए तभी गृहस्थाश्रम में प्रवेश करें-

वेदानधीत्य वेदो वा वेदं वापि यथाक्रमम्।
अविलुप्त ब्रह्मचर्यो गृहस्थास्रममाविशेत्॥

यह प्राथमिक योग्यता गृहस्थाश्रम की होनी चाहिए। वेद का प्रमाण देते ऋषिवर ने कहा कि जो पुरुष सब ओर से यज्ञोपवीत, ब्रह्मचर्य सेवन से उत्तम शिक्षा और विद्या से युक्त सुन्दर वस्त्र धारण किया हुआ ब्रह्मचर्य पूर्वक पूर्ण युवा हो तो विद्या ग्रहण कर गृहस्थाश्रम में आता है वही दूसरे विद्याजन्य में प्रसिद्ध होकर अतिशय शोभायुक्त मंगलकारी होता है-

युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान्भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

गृहस्थाश्रम धारित युवक-युवति जिन्हें पति-पत्नी की संज्ञा दी जाती रही है वे परिवार के आधार है। पति-पत्नी संज्ञा प्राप्त करने का अधिकार सरलता से प्राप्त नहीं होना चाहिए, वेदाधारित जीवन शैली का आधार संस्कार रहे है, संस्कारों को केवल धार्मिक कर्मकाण्ड तक सीमित न कर उकी व्यावहारिकता को ऋषिवर ने स्पष्ट किया है। गृहस्थाश्रम प्रवेश के संस्कार विवाह में ब्रह्मचर्य व वेदाध्ययन को महत्व दिया गया है।

संस्कार सम्पन्न परिवार का लक्षण करते हुए सत्यार्थप्रकाश में मनुस्मृति का प्रमाण देते हुए कहा-'जिसकुल में भार्या से भर्त्ता और पति से पत्नी अच्छे प्रकाश प्रसन्न रहती है, उसी कुल में सब सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते हैं, जहाँ कलह होता है वहाँ दौर्भाग्य और दारिद्रय स्थिर होता है।

सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुलेनित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्॥

परिवार-प्रसन्नता का आधार परस्पर प्रेम व समर्पण ही है। वैदिक परिवार को स्त्री की प्रसन्नता पर बल दिया है- जिस स्त्री की प्रसन्नता में सब कुल प्रसन्न होता, उसकी अप्रसन्नता में सब अप्रसन्न अर्थात् दुःखदायक हो जाता है-

स्त्रियां तुम रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम्।
तस्या त्वरोचमानायां सर्व मेव न रोचते॥

अन्य स्थानों पर भी स्त्री को परिवार की धुरी मानते हुए अनेक आदर-सत्कार की चर्चा है-जिस घर या कुल में स्त्री लोग शोकातुर होकर दुख पाती है, वह कुल शीघ्र नष्ट हो जाता है और जिस घर वा कुल में स्त्री लोग आनन्द से उत्साह और प्रसन्नता से भरी हुई रहती है वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है।

परिवार में अध्यात्म का वातावरण होना चाहिए क्योंकि अध्यात्म के अभाव में छोटा-सा दुःख भी पहाड़ जैसा प्रतीत होता है, जबकी ईश्वर भक्ति तथा आत्मचिन्त चट्टान जैसी समस्याओं को भी राई के समान बना देता है। ऋषिवर ने प्रत्येक परिवार में पञ्चमहायज्ञों की नित्यकर्म बताया है, साथ ही यह भी कहा है कि नित्यकर्म वे हैं जिनके करने से कोई लाभ दृष्टिगत नहीं होता, जबकि न करने से अत्यन्त हानि होती है-

सायं सायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातः सौमनसस्यदाता।
प्रातः प्रातः गृहपतिर्नो अग्निः सायं सायं सौमनसस्य दाता॥

जो सन्ध्या-सन्ध्या काल में होम होता है वह हुतद्रव्य प्रातः काल तनू वायु शद्धि द्वारा

सुखकारी होता है । तो अग्नि प्रातः प्रातः काल में होम किया जाता है वह-वह हुतद्रव्य सायंकाल पर्यन्त वायु की शुद्धि द्वारा बल बुद्धि और अरोग्यवर्धक होता है । इसी प्रकार सन्ध्या या ब्रह्मयज्ञ भी प्रातः

तस्तादहोत्रस्य संयोगे ब्राह्मणः सन्ध्यामुपासीत् ।
उद्यन्तमस्तं यान्तम् आदित्यम् अभिहपापन् ॥

गृहस्थी व्यक्ति के लिए विशेष रूप से ऋषिवर ने निर्देश किया है कि जो सन्ध्या एवं अग्निहोत्र प्रातः व सायं दोनों काल में न करें उसकों सज्जन लोग सब द्विजों के कर्मों से बाहर निकाल देवें अर्थात् शूद्रवत् समझे ।

न तिष्ठति तु श्र पूर्वां नोपासते यस्तु पश्चिमा ।
स साधुभिर्वहितष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः ॥

ऋषिवर की विशेषता है कि उन्होंने प्राचीन शास्त्रों उपनिषद्, स्मृतियां व गृह्यसूत्रादि में जो वेदानुकूल व उपयोगी मिला उस-उस को प्रमाण माना शेष छोड़ दिया । मानव जीवन के प्रमुख उद्देश्य व कर्त्तव्य माने जाने वाले पुरूषार्थ चतुष्ट्य धर्म, अर्थ और मोक्ष की सिद्धि को प्रातः सायं की जाने वाली सन्ध्यापद्धति में सम्मिलित कर यह सन्देश दिया कि इस जीवन का प्रमुख उद्देश्य विकृत नहीं होना चाहिए-

हे ईश्वर दयानिधे भवत्कृपयानेन जपोपासना दिकर्मणा । धमार्थ काम मोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भविन्नः ॥

परिवार के सभी सदस्य अपनी दैनदिन क्रियाओं में धर्म को मूल में रखकर अर्थ प्राप्ति के लिए पुरूषार्थ करें, परिश्रम करें, व जो साधन धर्म के मार्ग से प्राप्त हुए है । उसके अनुरूप ही कामनाएं रखें, उनकी पूर्ति भी करें, साथ ही ध्यान रहे कि अन्तिम उद्देश्य दुःखों से अत्यन्त निवृत्ति अर्थात् मोक्ष अपवर्ग या निःश्रेयस में बाधक इच्छाएं उत्पन्न न की जाये । धर्म एवं मोक्ष का कवच बनाकर मध्य में अर्थ व काम का संयोजन इसी निमित्त किया गया है कि मर्यादानुसार उद्देश्य पूर्ण हो सकें ।

आदर्श परिवार का चित्र अथर्ववेद में अति सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया गया है -

इमे गृहा मयो भुवा ऊर्जस्वन्तः पयस्वन्तः ।
पूर्णा वामेन तिष्ठन्तस्ते ना जानन्त्वायतः ॥

हे भगवन् हमारे ये घर सुख शान्ति और आनन्द को जन्म देने वाले शरीर की बलवान्, वीर्यवान्, तेजस्वी व पराक्रमशाली बनाने वाले दूध, दही व मखखन से परिपूर्ण और अन्य धन धान्य आदि सुखप्रद सामग्री से भरपूर और सदा सन्मार्ग पर चलने वाले हो तथा जब हम अपने घरों में लोट रहे हो तो हमकों भली प्रकार से जानने और पहचानने वाले हों ।

वर्तमान में एकाकी परिवार व्यवस्था का प्रचलन बढ़ा है, जिस सन्तान को माता-पिता ने लाड प्यार से पाल-पोस कर बड़ा करते है, योग्य बनाते है । वही सन्तान जब गृहस्थाश्रम में प्रवेश करती है तो एक ही नगर या ग्राम में होते हुए अलग रहना चहाते है क्योंकि माता-पिता व भाई-बहनों के साथ रहने से उनकी स्वछन्दता व्याधित होती है वृद्ध माता-पिता या तो अलग रहते है या वृद्धाश्रम की राह पकड़ते हैं इसकी दो हानियाँ है एक तो नव-दम्पत्ति के जन्म लेने वाली सन्तान दादा-दादी के प्यार से वञ्चित हो जाते है जब कि वेद का सन्देश है-हे पति-पत्नी तुम दोनों यहीं मिलकर रहो, एक दूसरे से अलग मत होवों। पुत्र-पुत्रिया नातियों के साथ खेलते हुए अपने घर में आनन्द मनाते हुए अपनी सम्पूर्ण आयु मिलकर सुखों का भोग करते हुए व्यतिति करों ।

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमापुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिमोदिमानौ स्वे गृहे ॥

सन्दर्भ :

१. सत्यार्थप्रकाश चतु. समुल्लास प्रथम श्लोक (मनुस्मृति से उद्धत)
२. ऋग्मं. ३ सू. ८ मन्त्र ४
३. सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुलास पृष्ठ ७४
४. सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुलास पृष्ठ ८३
५. शोचन्ति जाययो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोषन्ति तु रत्रेता वर्द्धाते तद्धि सर्वदा ।
मनु स.प्र. च.समु.
६. अथर्व. काण्ड १० अनु. ७ मन्त्र ३ व ४
७. सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुलास पृष्ठ ८५
८. मनुस्मृति से उद्धत-सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुलास पृष्ठ ८५
९. पञ्च महायज्ञ विधि सन्ध्याभाग
१०. अथर्व ७/६०/२
११. ऋ १०/७५/४२

-एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृतविभाग,
एम.बी.राज.स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हल्द्वानी, नैनीताल (उ.ख.)

शेष पृ. ३ से......

द्वारा जतीन बाधा के नेतृत्व में पंजाब पहुंचाया गया। गदर पार्टी के संघर्ष के साथ कामागाटामारु जलपोत की कथा ग्रहन रूप से जुड़ी है, जिसे गदरीवाया गुरुदत्त सिंह ने गदर पार्टी के लिए जापान से खरीदा था । २९ सितंबर १९१४ को कोलकत्ता के तट पर कामागाटामारु पर सवार सिखवासियों पर जबरदस्त फायरिंग करके अंग्रेज हहाकिमों ने सैकड़ों लोगों को हलाक कर दिया था ।

गदर पार्टी ने भारतीय सैनिकों और किसानों के संयुक्त सशस्त्र विद्रोह के माध्यम से ब्रिटिश राज को खत्म करने का नाकाम प्रयास किया । ब्रिटिश पुलिस को सुविदा जानकारियां प्रदान करके गदर पार्टी के अंदर मौद गहारों ने बगावत की समस्त योजना को २१ फरवरी १९१५ से रावलपिंडी, लाहोर, फिरोजपुर, मेरठ कैंटोन्मेंट से विद्रोह शुरू करने की वक्त से पहले ही नेस्तोनावूद करा दिया । सरगोधा छवनी में डेरा डाले करतार सिंह सराया को गिरफ्तार किया गया । मेरठ छावनी से विष्णुगणेश पिंगले पकड़ा गया । पंजाव से पृथ्वीसिंह आजाद गिरफ्तार हुए और उत्तर प्रदेश से शचींद्रनाथ शान्याल और पंडित परमानंद गिरफ्तार हुए । एक बाद एक बकरीबन सभी प्रमुख क्रांतिकारी गिरफ्तार कर लिए गए । रासविहारी घोस, मोहम्मद बरकतुल्ला, राजा महेन्द्रप्रताप, लाला हरदयाल, अपनि मुखर्जी और उयैदुल्ला सिंधी आदि ब्रिटिश पुलिस के हाथ नहीं आए ।

१५ अप्रैल १९१५ को गदर पार्टी के गिरफतार कुल २९१ क्रांतिकारियों पर प्रथम लाहौर कांसपिरेसी केस के तहत नुकदमा शुरू किया गया । इस केस में ४६ गदगी क्रांतिकारियों का सजा-ए-मौत दी गई । ११४ नदरी क्रातिकारियों को आजन्म कैद के लिए कालापानी भेजा गवा तथा अन्य ९३ क्रातिकारियों को विभिन्न वर्षों के लिए सुक्षण कारावास में भेजा गया । ब्रिटिश फौज ने हजारों भारतीय सैनिकों पर गदर पार्टी में शामिल होने का इल्जाम लगाकर उनका कोट मार्शल किया गया । अमेरिका में भी गदर पार्टी के क्रांतिकारियों पर झंडो-जमंन कांसपिरेसी के तहत मुकदमा चलाा गया और अनेक क्रांतिकारियों को सख्त सजा दी गई ।

अन्धविश्वास के जीवन की समाप्ति

- स्वामी श्रद्धानन्द

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितमन्यमानाः ।
जघन्यानाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः ॥ १

जहाँ प्रातः काल गंगास्नान से पहले कुश्ती का फिर प्रारम्भ हो गया था और डलिया झारी लेकर विश्वनाथादि की पूजा-अर्चन करके जलपान करना नित्य कर्म विधि का एक अंग बनाया गया था हाँ सायंकाल भ्रमण के पीछे मैं रात्रि का ब्यालू करता था। पौष १९३२ के अन्त में एक दिन भ्रमण करने ऐसी ओर गया जहाँ से मेरा निवास स्थान समीप न था। दूर चले ाने से लौटना साढ़े सात बजे हुआ। कुछ आराम करके आठ बजे दर्शनों के लिए चला। विश्वनाथ का मन्दिर एक ही गली में है जिसके दोनों ओर पुलिस का पहरा था। मैं विश्वनाथ की ओर से फाटक पर पहुँचा तो पहरेवालों ने मुझे रोक दिया। पूछने पर पता लगा कि रीवाँ की रानी दर्शन कर रही हैं, उनके चले जाने पर द्वार खुलेगा। मुझे कुछ खिसियाना-सा देख पुलिसमैन ने, जो मेरे पिता की अर्दली में रह चुका था, मोढ़ा बैठने को रख दिया। मैं एक पल को बैठ तो गया परन्तु विचार कुछ उलट गये। इस रुकावट से मेरे दिल पर ऐसी ठेस लगी जिसका वर्णन लेखनी नहीं कर सकती। जी घबरा गया और मैं उठा और उलटा चल दिया। पहरेवाले ने बहुत पुकारा परन्तु मैंने घर आकर दी दम लिया। आहट पाहट पाकर भृत्य भोजन लाया तो क्या देखता है कि मैं कपड़े पहिरे ही बिस्तरे पल लेट रहा हूँ। कह दिया कि भोजन नहीं करूँगा। नौकर मेरे आग्रह करने पर स्वयं खाना खाकर सो गया।

मुझे वह रात जागते बीती। मन की विचित्र व्याकुल दशा थी। प्रश्न पर प्रश्न उठते थे - क्या सचमुच वह जगत् स्वामी का दरबार है जिससे एक रानी उसके भक्तों को रोक सकती है ? क्या यह मूर्ति विश्वनाथ हो सकती है या वे देवता कहला सकते हैं जिनके अन्दर ऐसा पक्षपात हो ? परन्तु मूर्ति को देवता किसने बनाया ? नित्य मेरे सामने संगतराश ही तो मूर्तियाँ बनाते है..." कभी व्याकुल होकर दस-बीस मिनट टहलता, फिर बैठ ाता। फिर दूसरी ओर प्रश्नावली की लहर पर लहर उठती- "जब सांसरिक व्यवहारों में पक्षपात है तो देवताओं के दरबार में उसका दखल क्यों न हो। क्या मनुष्यों ने भी पक्षपात देवताओं से ही सीखा ? क्या मेरे स्वच्छन्द जीवन ने तो मुझे अविश्वासी नहीं बना दिया।" गोस्वामी तुलसीदास के दोहे और चौपाइयाँ याद आने लगीं। जब नीचे लिखे दोहे का स्मरण हुआ तो अश्रुधारा बह निकली-

बार-बार वर माँगहूँ, हर्ष देहु सिय रंग।
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग॥

एक घण्टे तक आँसुओं का तार बँधा रहा, अपने इष्टदेव महावीर से प्रकाश के लिए प्रार्थना की। परन्तु उस समय बालयति के ध्यान से भी कुछन हुआ। अन्त में रोना-धोना बन्द हुआ और प्राचीन यूनान रोम की मूर्तिपूजा के इतिहास पर मानसिक दृष्टि दौड़ गई। पहले जो लेख मूर्तिपूजा मे रुचि दिलाते थे, उस पर नया प्रकाश पड़ने लगा। हिन्दू मूर्तिपूजा के विरुद्ध ईसाइयों की जो दलीलें पढ़ी थी उन्होंने मुझे हिन्दू देवमाला से बेगाना बना दिया और आधी रात पीछे यह निश्चय करके सो गया कि अपने प्रिंसिपल पादरी ल्यूपोल्ट से संश्य निवृत्त करूँगा।

दूसरे दिन पादरी ल्यूपोल्ट को मैंने जा घेरा। वह बहुत प्रसन्न हुए और मुझे अपनी कलीसिया में लाने के लिए बहुत मगजपच्ची की। मेरे तीन दिनों के प्रश्नों से ही पादरी साहब घबरा गये और मुझे Hopeless Case (निराशाजनक मामला) समझकर उन्होंने छोड़ दिया। नास्तिकपन से मेरा चित्त अभी तक घबराता था। मुझसे अंग्रेजी पढ़ने बनारस संस्कृत कालेज के एक विद्यार्थी आया करते थे। वह दर्शनों का अभ्यास करते और योग्य विद्वान् थे। अंग्रेजी इसलिए पढ़ते थे कि उसके कारण उसकी छात्रवृत्ति तिगुना हो सकती थी। इन्होंने मुजे लघु कौमुदी पढ़ानी आरम्भ कर दी। व्याकरण में भी इनकी अच्छी गति थी। उनसे भी एक दिन स्वभावतः बातचीत हुई। उनकी युक्तियों ने मुझे शान्त तो न किया, उल्टी संस्कृत से ही मुझे घृणा हो गयी। मैंने पण्डित विद्याधर से कह दिया कि संस्कृत में कोई अक्ल की बात ही नहीं और इसलिए अब मैं कौमुदी न पढूँगा। परन्तु पण्डित जी मुझसे सरेस की तरह चिपक गये और थोड़ा बहुत व्याकरण का बोध करा के ही मुझे छोड़ा अस्तु !

यह तो आगे की बात है। सारांश यह कि हिन्दू मूर्तिपूजा से मुझे घृणा हो गई, प्रोटेस्टेण्ट ईसाइयों की दलीलें पोच मालूम हुई, हिन्दू शास्त्रज्ञ मेरी शान्ति न कर सके, इसलिए कुस्ती और गंगास्नान का नियम स्थिर रखते हुए भी दर्श स्पर्श से मुक्ति मिल गई। परन्तु अश्रद्धा की ओर सर्वथा जाने में झिझक बाकी थी।

एक दिन सिकरौर छावनी की ओर घूमने जाते हुए एक रोमन कैथोलिक पादरी मिल गये। बातचीत करते हु उन्हें प्रोटेस्टेण्ट पादरी ल्यूपोल्ट की अपेक्षा अधिक विनयशील, शांत और सहिष्णु पाया। उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि यदि ख्रीष्टीय मत का तत्त्व जानना हो तो कैथोलिक कलीसिया के सिद्धान्तों को समझना चाहिए। उनके चर्च में मेरा आना-जाना शुरू हुआ। उनकी धार्मिकसंस्थाओं तथा प्रार्थनासभाओं का मुझ पर विशेष प्रभाव पड़ा। मेरे श्रद्धासम्पन्न चित्त पर फादर लीफ के आचार व्यवहार का भी असर हुआ। मैं यहाँ तक उन पर मोहित हुआ कि रोमन कैथोलिक विधि से बसिस्मा लेने को तैयार हो गया। मेरे एक ही मित्र को मेरे निश्चय का पता था परन्तु उन्होंने मुझे रोकने की कोशिश ही न की। फाल्गुन १९३२ संवत् में यहाँ तक नौबत पहुँची कि बप्तिस्मा लेने की तिथि नियत करने के लिए मैं एक शाम को फादर लीफ की ओर गया। स्वाध्याय के कमरे में वह थे नहीं, मैंने अन्दर के कमरे का पर्दा उठाया। पादरी साहब तो वहाँ थे नहीं परन्तु एक दूसरे पादरी और एक ब्रह्मचर्यवस्त्रधारिणी (Nun) को ऐसी घृणित दशा में पाया कि मैं उल्टे पांव लौट गया और फिर उधर जाने का नाम न लिया।

क्रमशः पृ.११ पर

अल्ला का क़ानून या मुल्ला का ?

- आर.के.सिन्हा

सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला आ गया है । इसने मुसलमान औरतों को तीन तलाक की बर्बर कुप्रथा से मुक्ति दिलवा दी है । फ़ैसले में तीन नामक पर केन्द्र सरकार छह महीने के भीतर संसद से कानून बनाने का भी आदेश है । सुप्रीम कोर्ट ने इस दौरान तीन तलाक पर रोक लगा दी है । मुख्य न्यायाधीश जस्टिस खेहर की अध्यक्षता वाली सुप्रीम कोर्ट की पंच सदस्यीय मीठ ने ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए तीन तलाक को ३-२ के बहुमत से असंवैधानिक करार दे दिया । सुप्रीम कोर्ट ने इतिहास से सबक लिया और १९८६ में शाह बानो के गुजारा भत्ता वाले मामले में याचिकाकर्ता की अपील स्वीकार कर तीन तलाक पर अपनी ओर से कोई अंतिम फैसला न देकर इसको संसद पर छोड़ दिया । हां, अपना मंतव्य जरूर जाहिर कर दिया । कुल मिलाकर यह तो तय हो गया कि अब तलाक की उस कुप्रथा का देश में आज से ही अंत हो गया । बताने की जरूरत नहीं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दिनों स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से ही मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक़ कुप्रथा को समाप्त करने के लिए कानून बनाने का भरोसा दिया था ।

जीती मानवताः हारी दकियानूसी

कहते हैं कि न्याय अंधा होता है । वरना न्याय की देवी की दोनों आंख पर पट्टी नहीं बंधी होती । इसका पता चला गया । हालंकि, कई कट्टरपंथी मुस्लिम संगठन ट्रिपल तलाक को जारी रखने की पुरज़ोर नवकालत भी कर रहे थे, पर सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में मुसलमान औरतों को जीवनदान दे ही दिया । इस फैसले के आने से पहले तक यह कहा जा रहा था कि ट्रिपल तलाक पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले से ही यह तय हो जायेगा कि मानवता जीतती है या मुस्लिम सांप्रदायिकता और अमानवीयता ।

सुप्रीम कोर्ट के पांच में से तीन जजों जस्टिस कुरियन जोसफ, जस्टिस नरीमन और जस्टिस यूयू ललित ने तीन तलाक को असंवैधानिक करार दिया । तीनों ने जस्टिस नजीर और सीजेआई खेहर की राय का विरोध किया तीनों जजों ने तीन तलाक को संविधान के अनुच्छेद १४ का उल्लंघन करार दिया । जजों ने कहा कि संविधान का अनुच्छेद १४ समानता का अधिकार देता है । इस फैसले का मतलब यह है कि कोर्ट की तरफ से इस व्यवस्था को बहुमत के साथ खारिज किया गया है । कोर्ट ने मुस्लिम देशों में ट्रिपल तलाक पर लगे बैन का जिक्र किया और पूछा कि भारत इससे आजाद क्यों नहीं हो सकता ? कोर्ट ने यह भी कहा कि संसद को इस मामले पर कानून बनाना चाहिए । कोर्ट ने कानून बनाने के लिए ६ महीने का वक्त दिया है ।

तलाक के लिए कानून बनना चाहिए । निर्विवाद रूप से केन्द्र सरकार अब मुसलमान औरतों के हक में सशक्त कानून लेकर आएगी । अगर आपको भारत में मुस्लिम औरतों की हैसियत को जानना है अब्दुल बिस्मिल्लाह का उपन्यास झीनी-झीनी बीनी चदरिया पढ़ लें । इसमें मुसलमान परिवारों का चित्रण किया गया है, जहां नारी दूसरे या कहें कि तीसरे दर्जे के इंसान के रूप में रहती हैं । इसमें एक जगह लेखक एक पात्र से कहलवाता है, 'औरत की आखिर हैसियत ही क्या है ? औरत का इस्तेमाल ही क्या है ? चूल्हा-हांड़ी करे, साथ में सोये, बच्चे जने और पाँव दबाये । इनमें से किसी काम में कोई गड़बड़ की तो बोल देंगे, तलाक, तलाक, तलाक ।'

पाप है ट्रिपल तलाक

चाफ जस्टिस जेएस खेहर और जस्टिस नजीर ने अल्पमत में दिए फैसले में कहा कि तीन तलाक धार्मिक प्रैक्टिस है, इसलिए कोर्ट इसमें दखल नहीं देगा । हालांकि दोनों जजों ने यह भी माना कि यह पाप है, इसलिए सरकार को इसमें दखल देना चाहिए और तलाक के लिए कानून बनना चाहिए । निर्विवाद रूप से केन्द्र सरकार को इसमें दखल देना चाहिए और तलाक के लिए कानून बनना चाहिए । निर्विवाद रूप से केन्द्र सरकार अब मुसलमान औरतों के हक में सशक्त कानून लेकर आएगी । अगर आपको भारत में मुस्लिम औरतो की हैसियत को जानना है अब्दुल बिस्मिल्लाह का उपन्यास झीनी-झीनी बीनी चदरिया पढ़ लें । इसमें मुसलमान परिवारों का चित्रण किया गया है, जहां नारी दूसरे या कहें कि तीसरे दर्जे के इंसान के रूप में रहती है । इसमें एक जगह लेखक एक पात्र से कहलवाता है, 'औरत की आखिर हैसियत ही क्या है ? औरत का इस्तेमाल ही क्या है ? चूल्हा-हांड़ी करे, साथ में सोये, बच्चे जने और पाँ दबाये । इनमें से किसी काम में कोई गड़बड़ की तो बोल देंगे, तलाक, तलाक, तलाक ।'

मुसलमान औरतो के शत्रु कौन

जब मुसलमान औरतों को ट्रिपल तलाक से मुक्ति दिलवाने की मुहिम चली तो अपने को मुसलमानों का रहबर और रहनुमा कहने वाले मुस्लिम नेता ही विरोध करने लगे । ये प्रेस कांफ्रेंस कर रहे थे कि वे सरकार की ईंट से ईंट बजाकर रख देंगे । इनके पत्रकार सम्मेलनों में दाढ़ी वाले मुल्ला तो भरे होते थे, पर कोई औरत नहीं होती थी । ये मुसलमान औरतों को मध्ययुगीन काल में रखना चाहते हैं । ट्रिपल तलाक के मसले पर सरकार के प्रगतिशील रुख का ये बेशर्मी से विरोध कर रहे थे । कायदे से इनसे पूछा जान चाहिए कि क्या इन्हें यहां तीन तलाक को स्पोर्ट करने और गाय का मांस खाने के लिए सरकार से युद्ध के अलावा भी कुछ और आता है क्या ? जि दिनों ट्रिपल तलाक पर सुप्रीम कोर्ट में बहस चल रही थी तब मुझे एक दिन मुस्लिम मुर्सनल लॉ बोर्ड के एक सदस्य मिल गए । मैंने उनसे कुछ सवाल पूछे । एक- ट्रिपल तलाक कानून में बदलाव से आपकी ही

बेटियों को और अधिकार हासिल होंगे, इससे किसी हिन्दू का क्या लेना-देना ? दूसरा अगर तमाम मुस्लिम देशों ने इस कानून को खत्म कर दिया है और इसमें उनका इस्लाम आड़े नहीं आया तो फिर आपको यह कैसे गता है कि इससे इस देश में मुस्लिमों के अधिकारों या उनके धर्म पर कोई आंच आ जायेगी ? इन सवालों के वे जवाब नहीं दे सके । बिना बात की बहस में उलझे रहे । यदि यह कौम अब तक अँधेरे से निकल नहीं पाई तो उसका सबसे बड़ा कारण यही तथाकथित धर्म गुरु ही हैं ।

न तो क़ुरान में तलाक़ का प्रावधान है न हदीस में । क़ुरान अवश्य एक स्थान पर कहा है कि अल्लाह को जिन चीज़ों से नफ़रत है उसमें तलाक़ सबसे ऊपर है । न तो रसूल ने और न ही किसी नवी ने अपनी किसी वीवी को तलाक़ दिया । हाँ, एकाध को जब अपनी बीबी से मतभेद हुआ तो उसने उस वीवी को किसी अलग मकान में रख दिया । हाँ, एकाध को जब अपनी बीबी से मतभेद हुआ तो उसने उस बीबी को किसी अलग मकान में रख दिया । सारे सुख सुविधा के इंतज़ाम किये और ताउम्र उनकी देखरेख की ।

शादी, तलाक़ और गुजारा भत्ता के लिए कोई सही नियम न होने की वजह से अधिकतर मुसलमान औरतों को जानवरों से बदतर जिंदगी वितानी पड़ती रही है । कोई माने या न माने, पर मुसलमान औरतों के हक में मुस्लिम समाज का रुख वास्तव में बहुत ही भेदभावपूर्ण रहा है । अब निश्चित रूप से हालात बदलेंगे । जहां ज़्यादातर मुसलमान मर्द ट्रिपल तलाक को जारी रखने के हक में थे, वहीं मुसलमान औरतें इसका भारी विरोध कर रही थीं । भारत की ९२.१ फीसदी मुसलमान महिलाएं फटाफट होने वाले मौखिक तलाक पर रोक लगवाना चाह रही थीं । यह आंकडे एक सर्वे के बाद भारतीय मुस्लिम महिला आंदोलन (भीएमएमए) नाम के एक संगठन ने जारी किए थे । वेशक इन औरतों की मुराद पूरी हो गई है ।

अब सरकार को सुप्रीम कोर्ट के निर्देश का पालन करते हुए एक इस प्रकार का सख़्त कानून बनाने होगा जिससे कि इनके हक सुरक्षित रहें । ये चैन की सांस ले सकें । छह माह का भी इंतज़ार क्यों ? नवम्बर में शुरु होने वाले शरद सत्र में ही यह विधेयक पारित करके सरकार को यह सिद्ध करना चाहिए कि मोदी सरकार सभी महिलाओं को वरावरी का हक़ देने के लिए संकल्पित है ।

शेष पृ. ९ से...

मुसलमानी मत की ओर से पहले की उदासीन था क्योंकि पिताजी से जो उन लोगों के मुकद्दमे हुए उनमें उनके आचार व्यवहार कुछ उच्च न देखे गये । मुझे माला और तस्वीह दोनों से ही और 'ईसाई तस्वीह' (Rosary) तीनों से ही घृणा हो गई और कवीर भक्त का गीत कण्ठ हो गया जिसे मैं स्वर सहित गाया करता-

आउँगा न जाउँगा, मरूँगा न जीउँगा ।
गुरु के सबद प्याला, हरि-रस पीउँगा ।।
कोई जावे मक्के लै कोई जावे कासी ।
देखो रे लोगो दोहूँ गल-फांसी ।।
कोई फेरे माला लै कोई फेरे तसबी ।
देखो रे लोगो ये दोनों ही कसबी ।।
यह पूजें मढ़ियाँ लै यह पूजें गौराँ ।
देखो रे लोगो ये लुट गई चाराँ ।।
कहत कबीर सुनो री लोई ।
हम नाहिं किसी के हमरा न कोई ।।

मजहब सम्प्रदाय था .. से मेरा विश्वास उठ गया । मेरा मत यह हुआ कि मजहव एक ढकोसला है जो चालाक बुद्धिमानों ने आँख के अन्धों और गाँठ के पूरों को फाँसने के लिए गढ़ छोड़ा है । मैं अपने आपको पक्का नास्तिक समझकर अपने स्वभाव के अनुसार उस पर भी वेग से बह निकला ।

पूजा, दर्शन का अंकुश दूर हो चुका था, अव श्रद्धाहीन होने के कारण गंगा-स्नान पर क्यों निष्ठा रहनी चाहिए थी परन्तु नही, जो स्वभाव बन चुका था उसका प्रभाव कैसे दर होता ? प्रातःकाल का उठना, कसरत, कुश्ती और गंगा-स्नान बरावर जारी रहे ।

★★★

।। प्रेरक प्रसंग ।।

मातृशक्ति को प्रणाम

अपने चित्तौड़ प्रवास काल में एक दिन स्वामी दयानन्द सायंकाल के भ्रमण के लिए जा रहे थे । उनके संग कुछ राजा लोग तथा उनके राजपुरुष भी थे । उस समूह के सदस्यों के बीच मूर्ति-पूजा विषय पर वाद-प्रतिवाद चल रहा था, इतने में मार्ग पर स्थित एक देवालय दिखाई पड़ा । उसके सामने कुछ छोटे-छोटे बच्चे खेल रहे थे । स्वामी जी ने अचानक मस्तक नवाया और आगे बढ़ गए । उस समूह में सम्मिलित एक पण्डित ने कहा, "स्वामी जी आप मूर्ति-पूजा का जितना चाहे खण्डन करें, परन्तु देव-बल का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है कि मन्दिर के सामने आते ही आपका माथा अपने आप झुक गया ।" स्वामी जी अचानक रुक गए बालिका की ओर संकेत किया । बालिका ने वस्त्र नहीं पहने थे । स्वामी जी ने कहा, "देखते नहीं हो यह मातृशक्ति है जिसने हम सवको जन्म दिया है । मैंने मातृशक्ति को प्रणाम किया है मन्दिर के किसी देवी-देवता को नहीं ।"

दीप जलाओ

नकारात्मक के अन्धियारे में,
सकारात्मकता का दीप जलाओ ।

असंतोष की पगडण्डी पर,
विवेक की लाठी टिकाओ ।

क्रोध की अग्नि को,
संवेदना की फुहार से बुझाओ ।

ईर्ष्या-द्वेष की ढलान में,
हार्दिक ममत्व को जगाओ ।

मोह की आन्धि में,
वैराग्य की दीवार बनाओ ।

अहंकार के कंकड़ो को,
विनम्रता के झाडू से हटाओ ।

लोभ के चोर को,
तृप्ति के थाने में ले जाओ ।

काम के तूफान को,
आत्म-तत्व की स्मृति कराओ ।

रास्ते

वर्षो से वह
रास्ते पर खड़ा रहा,
इस आस से कि-
रास्ता उसे कही पहुंचा देगा ।
जीवन की घड़ियाँ
समाप्ति पर आई
अब जाकर उसे समझ आया
कि-
रास्ते स्वयं कही भी
जाया नहीं करते हैं...।

चैतन्य मुनि

क्रोध

- डॉ. देव शर्मा

बच्चो ! क्रोध से बचो ! क्रोध आपके लिये हुत बड़ा शत्रु है । क्या आप यह जानना नहीं चाहेंगे कि क्रोध किसे कहते हैं ? और क्रोध क्यों आता है ? क्रोध एक ऐसा रासायनिक परिवर्तन है, जो शरीर में सावाभाविक रूप से चलने वाली प्रक्रिया को, गति को रोककर उसको उल्टा चलने पर मजबूर कर देता है । हाँ भोजन के द्वारा शुद्ध रक्त बनना चाहिए । वहाँ विष मिला हुआ रक्त बनना शुरू हो जाता है, जो हमें पढ़ने में, याद करने में, बोलने में, सोचने में हमारी मदद करते हैं; क्रोध आते ही उनमें से बहुत सारे अवयव मर जाते हैं, और कोशिकाएं सिकुड़ जाती हैं, माइन्ड की बहुत सारी शक्ति नष्ट हो जाती है । इसी को कहते हैं - क्रोध ।

जब यह रासायनिक परिवर्तन शरीर में होता है, तो शरीर में इतना विष पैदा हो जाता है । यदि उसे इन्जेक्शन से निकाल लिया जाए और एक हजार व्यक्तियों को दे दिया जाये तो सब मर जायेंगे ।

क्रोध क्यों आता है ?

बच्चे ! क्रोध क्यों आता है- क्रोध के कई कारण हैं जो विचारने पर ही समझ में आते हैं । इसलिए आओ विचार करें -

- जब आप चाहते हो कि यह चीज तुम्हें मिल जाये, जब वो नहीं मिलती तो तब क्यो होता है ? क्रोध आता है ।
- जब आप चाहते हैं कि सब मेरी तरह से काम करें । और यदि कोई ऐसान करे तो क्या होता है ? निश्चित ही क्रोध आता है ।
- जब आपसे कोई काम ना सुलझ पाये और आप उसमें पूरी तरह से उलझ जायें, तब भी क्रोध आता है ।
- जब आपकी कोई निंदा करे, आपमें दोष निकाले, आपकी गलतियाँ बताये, तब भी क्रोध आता है ।
- जब आपको कोई शारीरिक परेशानी हो या आप शरीर से कमजोर हो, तब भी क्रोध आता है ।
- जब कोई प्रतियोगी आपसे आगे निकल जाये और आप पीछे रह जायें, तब भी आपको क्रोध आता है ।

अब आप अच्छी तरह जान गये होंगे कि क्रोध क्यों आता है ? पर क्या ऐसा होना आपके लि ठीक है ?

क्रोध से क्या मिलता है ?

क्रोध कहता है कि- मैं जिसके पास जाता हूँ,

- उसे बहरा कर देता हूँ ।
- उसे गूँगा कर देता हूँ ।
- उस अँधाकर देता हूँ ।
- बहादुर को कायर बना देता हूँ ।
- चेतन को जड़ बना देता हूँ ।
- किसी के किये हुए को नहीं देखने देता हूँ, हि की बात भी नहीं सुनने देता हूँ ।
- अपने गुरुजनों की और यहाँ तक कि अपने माता-पिता की हत्या भी करवा देता हूँ ।
- सब कुछ नष्ट करवा देता हूँ ।

इसलिए तो मुझे क्रोध कहते हैं । मसझे बच्चो ! आपके बिना बालाये आ जाता हूँ मैं क्रोद ।

क्रोध से कैसे बचें ?

मानसिक बचाव

जिन-जिन कारणों से क्रोध आता है, उन-उन पर विचार करें कि क्या यह ठीक है ?

- जिस चीज के लिये आप जिद करते हैं, उस पर सोचें कि क्या वह चीज बहुत जरूरी है ?
- जिसके बिना आपका काम चल सकता है, या आपके लिये जरूरी नहीं है, उसकी उपयोगिता भी नहीं है । आप बेकार ही उसके लिए जिद करते हो ।
- जो-जो आपके लिये जरूरी है, वह-वह तो आपके माता-पिता आपको दिलवा ही देते हैं ।

आपको क्या चाहिए ? यदि आप टॉफी, चॉकलेट, कोल्ड ड्रिंक्स, बर्गर, पिज्जा, आईसक्रीम आदि चाहते हैं और न मिलने पर क्रोध करते हैं, तो यह आपकी माँगें हैं, जो आपको नहीं करनी चाहिएं ।

आप चाहते हैं- माता-पिता आपके अनुसार चलें तो यह भी ठीक नहीं । जितना आप सोचेंगे, विचार करेंगे, उतना ही क्रोध से अपने आप बचते चले जायेंगे ।

शारीरिक बचाव

- क्रोध के समय ठंडा पानी पीएं ।
- कुछ लम्बे-लम्बे श्वास लें ।
- अच्छा संगीत सुनें ।
- उस जगह से हट जाएं ।
- अपने मन को समझाएं कि मुझे क्रोध नहीं करना है, इससे मेरी ही हानि है ।
- प्रतिदिन व्यायाम अवश्य करें ।
- व्यायाम से ग्रन्थियों पर कन्ट्रोल होता है, और उससे उचित मात्रा में रस निकलता है । न कम, न अधिक । जिससे काम, क्रोध, लोभ, मोह सभी पर नियंत्रण होता है ।

आत्म-विश्वास

बच्चो ! आपको अवश्य ही जानना चाहिए कि-

- आत्मविश्वास क्या होता है ?
- यह कहाँ रहता है ?
- आत्मविश्वास कैसे आता है ?

आत्मविश्वास क्या होता है ?

हर बच्चे में भगवान ने बहुत अधिक शक्ति दी है, पर वे बच्चे जानते नहीं, इसलिए बड़े होने पर भी कमजोर बने रहते है । अन्दर की शक्ति को पहचानने का नाम ही आत्मविश्वास है । यह वह शक्ति है, जिसको पाकर बच्चे घबराते नहीं, डरते नहीं, झूठ नहीं बोलते और अच्छे काम करते हैं । जैसे-कि आत्मविश्वास शब्द से ही पता चलता है 'आत्मा में विश्वास, आत्मा में शक्ति' । शक्ति आत्मा में रहती है, इसलिए आत्मा में जितनी स्वच्छता आएगी, उतना ही शक्ति का विस्तार होगा ।

ऋत सत्य और सत्य का रहस्य

- पं. उम्मेद सिंह विशारद

ईश्वर ऋत सत्य है और भूत, भविष्य व वर्तमान का व्यवहार ऋत सत्य में नहीं होता है। वह तीनों कालो के चपेट में नहीं आता है। अतः सत्य शब्द केवल मनुष्य से ही सम्बन्ध रखता है। ईश्वर से नहीं और सत्य सदैव ऋत सत्य की अपेक्षा असत्य होता है। संसार के सारे व्यवहार सत्य के आधार पर होते है वहा संयोग व वियोग अवश्य होता है। परन्तु ईश्वर रूपी ऋत सत्य में सयोंग, वियोग नही होता है, सदैव सयोंग रहता है। अतः वास्तविक सत्य तो ऋत सत्य है। हम संसार में जो जो पदार्थ प्राणीयों के कल्याण के लिये ईश्वर द्वारा प्रदत्त हैं उनके गुणकार्य स्वभाव सदैव एक रस रहते हैं वह कभी नहीं बदलते हैं जैसे सूर्य का प्रकाश, चन्द्रमा की शीतलता, वायु का प्रवाह, अग्नि की उष्णता, जल की प्राणादायिनी शक्ति, धरती की ऊर्जा शक्ति, फलों में खटास, मिठास, उसी मे अन्दर बीज की उत्पत्ती तथा ब्रह्मण्ड की उत्पति, स्थिति व प्रलय, प्राणियो में उत्पति में की स्भाविक प्रवृत्ति, शरीर के इन्द्रियो के गुण कार्य कभी नहीं बदलते, प्राणीयों का जन्म व मृत्यु नियामानुसार आत्मा की नित्यता, आदि में सम्पूर्ण ब्रहाड्डण्ड में अदृश्य रुप से ऋत सत्य व्यवहार कार्य कर रहा हैं। इसलिये यह गूड रहस्य हैं। ऋत सत्य द्वारा पदार्थों के गुण हमे सहज में प्राप्त हो रहे है इसलिए उनके प्रति हमारा ध्यान नही जाता है ! इसलिए जीवन दायिनी पदार्थ ऋत सत्य सदैव हमें प्राप्त है वह ईश्वर द्वारा प्रदत है।

सत्य

मानवीय जगत में व्यवहारिक रुप में जो जो कर्म किये जाते हैं यदि वह कार्य आदान प्रदान में सच्चे हैं तो वह सत्य है यदि व्यवहार में छल कपट है तो असत्य है, मानवीय जगत में 'कर्म' गुण कर्मानुसार बदलते रहते हैं। यदि मानवीय व्यवहार में प्रत्येक कर्म को सच्चाई से सत्य के आधार पर किये जाए तो शान्ति बनी रहती है। ईश्वर ने मानव को कर्म करने को स्वतन्त्र रखा है, औ सत कर्म और असत्य कर्म मनुष्य के विवेक पर निर्भर होते है तथा व्यवहारिक सत्य देश काल परिस्थितिनुसार बदलता रहता है।

जरा गहराई से विचार करे तो संसार में जो हमें दीखता है वह असत्य है और जो नहीं दिखता वही सत्य है। हर गति तथा अगतिशिलता अचल, स्थिर अप्रवर्तन शील तत्व के कारण टिकी हुई है। जैसे वृक्ष दृश्य है तो बीज इद्दश्य है। शरीर दृश्य है तो आत्मा अदृश्य है। इसी प्रकार संसार के प्रत्येक वदृश्य परिवर्तन शील है और उसके आधार ईश्वर और उसके गुण अपरिवर्तन शील है। आइए विचार करते है।

आत्म श्रधा का आधार सत्य है।

भारतवर्ष का इतिहास बताता है कि महाभारत काल के बाद ईश्वरीय धर्म वेदानुकूल प्राचीन पद्धति के अनुसार, सत्य पर आधारित मान्यताओं को सदैव के लिये प्रचारित करने के लिये एक सत्य का मंच आर्य समाज के संस्थापक, एक मात्र **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी** थे। उन्होंने दो कार्य बहुत ही उत्तम सर्वहितकारी किये एक सत्यार्थ मार्ग जानने हेतु अमर ग्रन्थ **सत्यार्थ प्रकाश** की रचना की और दूसरा कार्य मानव जीवन को सुखी व सत्यमार्गी बनाने के लिये **संस्कार विधि** अर्थात जन्म से मृत्यु तक १६ संस्कारों को करने का विधान किया।

प्रत्येक मनुष्य की अपनी आत्म श्रद्धा या आत्म गौरव की एक तोल होती है, यह तौल क्या है अपनी वाणी विचार और क्रिया के सत्य असत्य के विवेचन का वह एक माप है, जिसमे वह अपने सम्बन्ध की मान्यता को स्थिर करता है। मनुष्य जितना सत्य से विमुख होगा उतना ही अपने आप में अश्रधालु बनता है। जिसने सत्य का परित्याग कर दिया समझो उसने अपने लिये सुख का मार्ग अवरुद्ध कर दिया।

"सत्यमेव जायते नानृतम" सत्य की जय होती है असत्य की नही, सत्य से बढ़कर कोई धर्म नही है। आत्मा स्वयं शाश्वत सत्य है। सत्य सरल भी है और स्वाभाविक भी है। यदि तुच्छ अहंकार और स्वार्थ मयता को प्रमुख न बनाया जाए तो सत्य तथ्य छिपाने की आवश्यकता ही न पड़े। सत्य की अभिव्यक्ति से ही जीवन की जटिलता का समाधान हो सकता है।

आत्मा के एश्वर्य और सत्य के शास्वत स्वरूप को शाश्वत बनाऐ रखने के लिये, सत्य वोलना, सत्य पर चलना, ऋत सत्य पर आधारित मान्यताओं को मानना ही जीवन का अर्थात जीव का प्रमुख कृत्य है। सत्य धारी को ईश्वर को ढूंढने जाने के लिए भटकने की आवश्यकता नही है वह आत्मा मे ही ईश्वरीय दर्शन का आनन्द लेता है। सत्य जीवन की मधुरता है जीवन की पूर्णता है।

सांच बराबर तप नही, झूठ बरोबर पाप।
जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप-॥

हम असत्य को सत्य अस्थिर परिर्वतनशील को अपरिर्वतन शील, क्षण भंगुर को सनातन और प्रतीतो के प्रति जागे हुए है और प्राप्त के प्रति सोए हुए है। असत्य के प्रति जागे हुए है और सत्य के प्रति सोये हुए है। असत्य के प्रति जागे हुएहै और स्थिर के प्रति सोये हुए है। जीवन का लक्ष्य सत्य जाना है। हमारा जीवन असत्य में वीत रहा है, हम चारों और से असत्य से धिरे हुए है। क्योंकि ऋत सत्य सर्वव्यापक है और निकटतम होने के कारण अदृश्य है। सत्य हमारे जन्म से पहले भी था और हमारे मृत्यु के बाद भी रहेगा, इसलिए हमारी खोज का विषय ऋत सत्य हीी होना चाहिए।

सत्य असत्य के मूलगत भेद क्या है।

विश्व ऋत सत्य के आधार पर टिका हुआहै। असत्य वस्तु, असत्य विचार, असत्य संस्था के भीतर उसके ताड़ने वाले तत्व रहते है, इसी के अर्न्तद्वन्द कहते है। असत्य के पेट में पड़ा जो अन्दर का विरोध है, वह सत्य को धीरे-धीरे फोड़ता जाता है और असत्य के भीतर सत्य अपने पैने पर से उभार आता है। क्योंकि सत्य दुविधा रहित व द्वेष रहित होता है। जहां भीतर सत्य और असत्य होंगे वहीं तो संघर्ष होगा। हमने जितनी भी संस्थाऐं व धर्म सम्प्रदाय बनाऐ है उनका प्रमुख लक्ष्य सत्य को ढूंढना है। फोर्ट में वकील सत्य को ढूंढने के लिये ही तो लड़ते है और जज का कार्य सत्य असत्य को ढूंड निकालना है। तभी वेदों ने कहा सारा संसार ऋत सत्य पर टिका हुआ है।

निष्कर्ष

वेद उपनिषिद, दर्शन शास्त्र, ब्रह्मणण ग्रन्थ तथा जो वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थ है उसमें वर्णित शिक्षा और संसार में सत्यवादी सत्यपथ गामी युग पुरुषा ने सत्य को जाना और प्रचार करते-करते अपने जीवनों की आहूति दे दी। यदि संसार के सभी धर्म सम्प्रदाय संगठन सत्य और ऋत सत्य पर व्यवहारिक चलने का आवाहन करे तो, मानव समाज में तमाम अन्धविश्वास, रूढ़ी वादिता, उग्रवाद, हिंसा, द्वेष, समाप्त हो जायेंगे। जिस दिन हम सत्य और ऋत सत्य को समझ जायेंगे और तदानुकूल व्यवहार करने लगेगें बस उसी दिन से हम ईश्वर को समज सकेंगे और तव हम किसी भी जगह खड़े होगे तो यही कहेंगे सत्य मेव जयते नानृतम।

अब काजी भी बनेगी मुस्लिम महिलाएं

- रमेश ठाकुर

विशेषकर अल्पसंख्यक समुदाय से ताल्लुक रखने वाली महिलाओं के मौलिक हकों पर सदियों से कुछ कट्टरपंथियों और दुर्दात सामाजिक सोच का कब्जा रहा है। पर, अब वह अपने प्रदत्त मूलभूत अधिकारों से वंचित नहीं रहेंगी। उनके वाजिब हकों-अधिकारों को दिलाने की आवाजें देश-विदेश हर जगह बुलंद होने लगी हैं। हाल ही में जर्मनी से मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की वकालत करने वाली एक अच्छी सामाजिक खबर सुनने को मिली। खबर है कि विशेष समुदाय की महिलाओं ने एकजुट होकर वहां एक लिबरल मस्जिद का निर्माण करके एक मुस्लिम महिला को उसका इमाम वनाने का निर्णय लिया। इस निर्णय के पीछे की वजह पर उन्होंने अपने तर्क प्रस्तुत किए कि इस्लाम में जो अधिकार एक पुरुष के हैं, वही एक महलिा के। जर्मन सरकार ने भी इस कदम की सराहना करते हुए सभी महिलाओं की हिम्मत की तारीफ की। निश्चित रूप से बदलाव का यह कदम नई सुवह का सूरज जगने जैसा कहा जाएगा। क्योंकि किसी महिला को मस्जिद के इमाम के अहम पद की जिम्मेदारी मिलना खुद में बदलते समाज की तस्वीर पेश करने जैसा है। समुदाय के अंतर्गत हर वर्ग को इसकी सराहना करनी चाहिए। भारत के लिहाज से भी यह खबर मूस्लिम महिलाओं के लिए बेजोड सशक्तीकरण के क्षेत्र में उम्मीद बढ़ाने का काम करेगी। तीन तलाक प्रथा खत्म होने के बाद मुस्लिम महिलाओं को अपने अधिकारों से लहने की जो नई शक्ति मिली है।

उममें यह खबर उम्मीद की किरण के समान होगी। वहां की मुस्लिम महिलाओं द्वारा उठाए गए साहसी कदम का असर भारत में प्रत्यक्ष रूप से दिखने लगा है। भारतीय मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों पर काम करने वाली संस्था 'भारतीय मुस्लिम महिला आंदोलन' से जुड़ी महिलाएं पिछले कुछ माह से भारतीय मुस्लिम महिलाओं को काजी या इमाम बनाने के लिए ट्रेनिंग दे रही हैं। संस्था की स्थापना जकिया सोनम ने की है, जिन्होंने पूर्व में दारुल उलूम निस्वां को भी स्थापित किया था। इन महिलाों को भी दारुल उलूम निस्वां की ही सरपरस्ती में तैयार किया जा रहा है। फिलहाल इस संस्था का उद्देश्य संपूर्ण भारत में पंद्रह-बीस महिलाओं को काजी वनाना है। लेकिन मुस्लिम महिलाओं के इस अदम्य साहस ने कट्टरपंथियों के माथे पर चिंता की लकीरें खींच दी हैं। इसके लिए जकिया सोनम कुछ सप्ताह पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिली थीं, उन्होंने पीएम के समक्ष जर्मनी में वनी मुस्लिम महिला के काजी बनने का उदाहरण भी दिया। इसके बाद पीएम ने उनको सहयोग का आश्वासन दिया। पीएम ने उनको सहयोग का आश्वासन दिया। पीएम के सहयोग ने उन्हें और बल दिया है। देखा जाए तो दुनिया की तकरीबन आधी आवादी महिलाओं की है। इस लिहाज से महिलाओं को तमाम क्षेत्रों में वरावरी का हक मिलना चाहिए, लेकिन ऐसा कभी हो न सका। कमोबेश दुनिया भर में महिलाओं को आज भी दोयम दर्जे पर रखा जाता है। अमूमन सभी समुदायों में हिलाओं को पुरुषों से कमतर मानने की प्रवृत्ति है, खासकर मुस्लिम समाज में तो महिलाओं की हालत बेहद बदतर है। इस समदाय में बदलाव की वहुत जरूरत है। भारतीय मस्जिदों में भी मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी हो। पुरुषों की तरह महिलाए भी काजी बनें। उन्हें भी वरावरी का हक मिले। भारत में मुस्लिम महिलाओं को उनके मौलिक अधिकारों को दिलाने की शुरुआत फिलहाल तीन तलाक हो खत्म करके हो चुकी है। महज तीन बार तलाक कह कर पारिवारिक संबंधों को खत्म करने के रिवाज को जबसे खत्म करने का निर्णय लिया गया है, तभी से मुस्लिम महिलाओं को नई हिम्मत मिली है। विशेषकर भारत में इस्लाम में कई ऐसी प्रथाएं रही हैं, जो कही न कहीं भारतीय संविधान द्वारा दिए गए मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता है। ये सभी कानून के जद में आएंगी। इस्लाम की कुछ प्रथाएं मुस्लिम महिलों को उनके समुदाय के पुरुषों की तुलना में और अन्य समुदायों की महिलाओं की तुलना में असमान व कमजोर बना देती हैं। ऐसी प्रथाओं को खत्म करने की दरकार है। कट्टरपंथियों की दुर्दांत सोच के आगे भारत में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति दशकों से बदतर रही है। स्थिति दशकों से बदतर रही है। लेकिन अब महिलाएं बंदिशों की बेड़ियां खुद तोड़ने को आतुर हैं। इसके लिए समाज का हर वर्ग उनका समर्थन भी कर रहा है। समाज भले फेमिनिजा को लेकर बड़े-बड़े सेमिनारों और संगोष्ठियों व अलग-अलग कैंपेनों की माध्यम से महिलाओं और उनको अधिकारों की वकालत करते हों। मगर हकीकत हमारी अपीलों से बहुत इतनी है।

हिंदुस्तान में महिलाओं की, खासतौर से मुस्लिम महिलाओं की, हाली क्या है, बताने की जरूरत भी नहीं है ार शायद किसी से छुपी भी नहीं है। चाहे सामाजिक रूप से हो या फिर धर्म के नाम पर भारतीय मुस्लिम महिलाओं की स्थिति बद से बदतर है। चरमपंथियों और धर्म के ठेकेदारों का हमेशा से मानना रहा है कि मुस्लिम महिलाएं घर में ही रहे तो ठीक है। उनको पुरुषों की तरह कभी आजादी नहीं दी गई। अगर कोई मुस्लिम महिला ऐसा दुस्साहस करती है तो उस पर फतवे का शिगूफा छोड़ दिया जाता रहा है। मस्जिदों में मुस्लिम महिलाओं का काजी बनना एक ऐसी पहल जो सच में सराहनीय है। इससे न सिर्फ मौजूदा समय में बदहाली की जिंदगी जी रही मुस्लिम महिलाओं को खुली फिजां में जीने का बल मिलेगा, बल्कि ये चरमपंथी खैए और कट्टरपंथी स्वभाव के मूल को भी नष्ट करने में रामवाण साबित होगी। अब २१ वीं सदी की सुवह है, इसलिए अब वह समय आ चुका है, जब समुदाय की महिलाओं ने खुद उस बंदिश और अपने पर जकड़ी हुई बेड़ियों को तोड़ महिला सशक्तीकरण जैसे संवेदनशील मुद्दे को एक सही दिशा दी है और बल दिया है।

भारत के ८५ प्रतिशत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पैदा किये थे आर्य समाज ने

-विवेक प्रिय आर्य

महर्षि दयानंद सरस्वती ने राष्ट्रवादी विचारधारा को आगे बढाने में उल्लेखनीय योगदान दिया । उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज शिक्षा, समाज-सुधार एवं राषट्रीयता का आन्दोलन था । स्वतंत्रता पूर्व काल में हिंदू समाज के नवजागरण और पुनरुत्यान आंदोलन के रूप में भी आर्य समाज सर्वाधिक शक्तिशाली आवाज था । यह पूरे पश्चिम और उत्तर भारत में सक्रिय था तथा सुप्त हिन्दू जाति को जागृत करने में संलग्न था । दुनिया में आर्य समाज एकमात्र ऐसा संगठन है, जिसके द्वारा धर्म, समाज और राष्ट्र तीनों के लिए आभूतपूर्व कार्य किए गए हैं । आर्य समाज किसी मत, मजहब व पंथ का नाग नही है, जबकि आर्य समाज एक सुधार, एक आन्दोलन का नाम है । आर्य समाज के अनुयायिों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में चढ़चढ कर भाग लिया । भारत के ७५ प्रतिशत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आर्य समाज ने पैदा किये थे । स्वदेशी आन्दोलन का मूल सूत्रधार ही आर्य समाज था । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर भी आर्य समाज के प्रभाव से ही स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ हुआ था । महर्षि दयानंद सरस्वती आधुनिक भारत के धार्मिक नेतोओं ने प्रथम महापुरुष थे, जिन्होंने स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया । स्वामी जी ने धर्म परिवर्तन कर चुके लोगो को पुनः अपने वैदिक धर्म में वापिसी के लिए प्रेरणा देकर शुद्धि आंदोलन चलाया था । आर्य समाजियों ने सबसे बड़ा काम जाति व्यवस्था को तोड़ने और सभी हिन्दुओं ने समानता का भाव जागृत करने का किया । भारतीयों में भारतीयता को अपनाने, प्राचीन संस्कृति को मौलिक रूप में स्वीकार करने, पश्चिमी प्रभाव को विशुद्ध भारतीयता यानी वेदों की ओर लोटो के नारे के साथ समाप्त करने तथा सभी भारतीयों को एकतावद्ध करने के लिए प्रेरित करने का काम आर्य समाज ने किया । आर्य समाज मानय मात्र की अग्नति करने वाला संगठन है, जिसका उद्देश्य शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्ननति करना है । वह अपनी ही उत्पति से संतुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति मानता हैं ।

भारत को आजाद कराने में महर्षि दयानन्द सरस्वती को प्रथम पुरोष कहा गया । उनके द्वारा ही सन् १८५७ में भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नीव डाली गयी थी और अंग्रेज शासन के विरुद्ध जनजागरण प्रारम्भ कर दिया था । सन् ५७ की क्रांति के विफल हो जाने पर महर्षि दयानन्द ने तात्कालिक परिस्थिति के अनुसार अपना मार्ग बदलकर भाषण और ळेखन द्वारा सर्वरिप क्रांति प्रारम्भ की । महर्षि दयानन्द ही वहह एकले भारतीय है जिन्होंने अंग्रेजों के साम्राज्य में सर्वप्रथम स्वदेशी राज्य की मांग की दी । वे अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं -कोई किता ही करे जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि, उत्तम होता है । सन् १८७० नेम लाहौर में विदेशी कपड़ों की होली जलाई । स्टाम्प डवूटी व नमक के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा परिणाम स्वरूप आर्य समाज के अनेक कार्यकर्ता व नेता स्वतन्त्रता संग्राम में देश को आजाद करवाने के लिए कूद पड़े । सन् १८५७ के पश्चात की क्रांति के जन्मदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके शिष्य पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा (जो क्रांतिकारियों के गुरु थे), प्रसिद्ध इरांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, सेनापति दाफ्ट, मदनलाल ढींगरा, रामप्रसाद बिस्मिल, गोपालकृष्ण गोखले, सरदार भगत सिंह इत्यादि शिष्यों ने स्वाधीनता आन्दोलन में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा । इंग्लैण्ड में भारत के लिए जितनी क्रांति हुई वह श्याम जी कृष्ण वर्मा के ''इण्डिया हाउस'' से ही हुई । सरदार भगत सिंह तो जन्म से ही आर्य समाजी थे । इनके दादा सरदार अर्जुन सिंह विशुद्ध आर्य समाजी थे और इनके पिता श्री किशन सिंह भी आर्य समाजी थे । गांधी जी जब अफ्रीका से लौटकर भारत आये तब उनको ठहराने का किसी में साहस न था । तब आर्य समाजी नेता स्वामी श्रद्धानंद ने ही उनको गुरुकुल कांगी में ठहराया था और गांधी जी को महात्मा गांधी की उपाधि से सुयोभित श्री स्वामी श्रद्धानंद जी ने ही किया था । स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लगभग सभी स्थानों में ऐसी स्थिति थी कि कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ताओं को यदि कहीं आश्रय, भोजन, निवास आदि मिलता था, तो वह किसी आर्य के घर में ही मिलता था । जब-जब सनातन धर्म पर कोई आक्षेप गाए गये, महापुरुषों पर किसी ने कीचड़ ? उछाला तो ऐसे लोगों को आर्य समाज ने ही जवाव देकर पुप किया है । हैदरावाद निजाम ने साप्रदायिक कट्टरता के कारण हिन्दू मान्यताओं पर १६ प्रतिबंध लगाए थे जिनमें धार्मिक, पारिवारिक, सामाजिक रीतिरिवा सम्मिलित थे ।

सन् १९३७ में पंद्रह हजार से अधिक आर्य समाजी जेल गेए और तीव्र आंदोलन किया, कई शहीद हो गए निजाम ने घबराकर सारी पावन्दियाँ हढा ली, जिन व्यक्तियों में आर्य समाज के द्वारा दलाये आंदोलन में भाग लिया, कारागार गए उन्हे भारत शासन द्वारा त्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की भांति सन्मान देकर पेंशन दी जा रही है । अमृतसर (पंजाब) में कांग्रेस का अधिवेशन करवाने का साहस अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी में ही था । उस समय की स्थिति को देखकर किसी भी कांग्रेसी में इतना साहस न था जो सम्मुख आता और कांग्रेस का अधिवेशन करवा सकता । पंजाब केसरी लाला लाजपत राय प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता थे उनकी देशभक्ति किसी से तिरोहित नही । सन् १९८३ में दक्षिण भारत मीनाक्षीपुरम में पूरे गाँव को मुस्लिम बना दिया गया था । शिव मंदिर को मस्जिद बना दिया गया था । सम्पूर्ण भारत से आर्य समाज के द्वारा आंदोन किया गया और वहाँ जाकर हजारों आर्य समाजियों ने शुद्धि हेतु प्रयास किया और पुनः सनातन धर्म में सभी को दीक्षित किया, मंदिर की पुनः स्थापना की । कश्मीर में जब हिंदुओं के मंदिर तोड़ना प्रारम्भ हुआ तो उनकी ओर से आर्य समाज ने प्रयास किया और शासन से १० करोड़ का मुआवजा दिलवाया । स्वतन्त्रता आंदोलनकारियों के सर्वेक्षम के अनुसार रयतन्त्रता के लिए ८-८५ प्रतिशत व्यक्ति आर्य समाज के माध्यम से आए थे । इसी वात को कॉंग्रेस के इतिहासकार डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने भी लिखा है ।

धर्म प्रचार में व्यक्तित्व का प्रभाव

-श्री रमेशचन्द्र जी वन्द्योपाध्याय

यदि हम, परमतावलम्वियों को स्वमत की दीक्षा देने वाले धर्मों के इतिहास का अध्ययन करें तो हमें पता लगेगा कि धर्म-परिवर्तन के सम्बन्ध में सिद्धान्तों की अपेक्षा व्यक्तित्व का स्थान अधिक महत्व का है। वौद्ध धर्म ईसाई धर्म, इस्लाम, सब का इतिहास यही प्रकट करता है। आदि के वौद्ध भिक्षु, आरम्भ में होने वाले ईसाई (विशेष कर ईसा के प्रथम शिष्य) तथा प्रथम खलीफ़ाओं ने दार्शनिक वक्तृताओं और तर्कपूर्ण शास्त्रार्थों की अपेक्षा अपने वैयक्तिक आचरण के उदाहरण से अपने अपने धर्म का अधिक प्रचार किया। अपने शास्त्रों की उच्चता की घोषणा अथवा आचरणा सम्वन्धी विधि निषेध की अपेक्षा प्रेम और सेवा की वह भावना जो उक्त मिशनरियों में से कुछ ने मनुष्यमात्र के लिये तथा अन्यों ने अपने अनुयायियों और सहयोगियों के लिये प्रदर्शित की- अधिक बलवान आकर्षण सिद्ध हुई। यह सब ऐसे युग में हुआ जब धर्म के लिये अधिक आदर था और गहरी श्रद्धा थी।

आज नास्तिकता का युग है। यह बात विस्मृत नहीं की जा सकती कि संसार के सभी भागों में मनुष्य के मस्तिष्क से धर्म का प्रभाव उठ गया है। अब तक यह विश्वास किया जाता था कि इस्लाम संसारके सभी धर्मोमें अधिक कट्टर धर्म है और इसमें सिद्धान्तों और मज़हवी कृत्यों पर विश्वास करने के लिए सब धर्मों से अधिक कड़ा बन्धन है। किन्तु वहाबी और अहमदियों ने उन सिद्धान्तों को-जो इस्लाम का आधार समझे जाते थे-बड़ा भारी आघात पहुंचाया है। यदि योरोपीयन लेखकों की सम्मति ठीक है तो आधुनिक तुर्क और इराकियों ने भी कट्टरता के मार्ग को छोड़ दिया है। एक ओर धार्मिक ग्रन्थों में अथवा कम से कम उनके अव तक किये जाने वाले अर्थों में श्रद्धा कम हो रही है तो दूसरी ओर कमालपाशा और इब्नसऊद में विश्वास बढ़ रहा है। धार्मिक क्षेत्र में वैयक्तिक प्रभाव का क्या फल होता है यह प्रसिद्ध वहावी नेता के कार्यों से भली भांति प्रकट होता है। न्यूयार्क के प्रसिद्ध मासिकपत्र 'एशिया' ने इब्नसऊद के विषय में एक आश्चर्यजनक घटना का इस प्कार वर्णन किया है कि एक वार एक ब्रिटिश अफसर इब्नसऊद का अतिथि वना। यह घटना उस समय को है जब कि प्रायः नित्य ही नई नई जातियां इब्नसऊद के झगडे के नीचे आ रही थीं, अर्थात् हुसैन से उसका युद्ध होने से कुछ ही पूर्व की। अस्तु। एक दिन संध्या समय ब्रिटिश अफ़सर अपने डेरे के सामने खुली जगह में टहल रहा था कि यकायक एक वुड्ढा अरव उसकी ओर यह चिल्लाता हुआ दौड़ा-'काफ़िर, सुअर ! तू ने मेरी नमाज़ की जगह को नापाक कर दिया।' शीघ्र ही हथियार बन्द अरवों की एक भीड़ इकट्ठी हो गई और क्रोध में आकर वे उस अफ़सर पर टूटने ही वाले थे कि इब्नसऊद के अङ्ग-रक्षकों का एक दल आ गया और उसने बुड्ढे शेख और उसके साथियों को पकड़ लिया। दूसरे दिन उन पर राजकीय महमान की अवज्ञा और शाही कैम्प में झगड़ा करने का अभियोग लगाया। बुड्ढे अरब ने बयान दिया कि मैं काफ़िर को दगड देने का यत्न कर रहा था; क्योंकि वह उस ज़मीन पर टहल रहा था जो सुवह नमाज़ पढ़ने के कारण पाक हो गई थी। इब्नसऊद को इस पर बड़ा क्रोध आया। उसने कहा, "क्या सारी पृथ्वी अल्लाह की प्रार्थना करने के लिये नहीं है ? इस्लाम ने यह कब बतलाया है कि ज़मीन का एक हिस्सा दूसरे हिस्से से अधिकप वित्र है ? तुम नहीं जानते कि इसी अन्धविश्वास के कारण मैं मस्जिदों की प्रतिष्ठा करने के विरुद्ध हूँ।"

अपराधी अरबों के कोड़े लगाये गये और इसी प्रकार के दूसरे कठोर दण्ड दिये गये। केवल इब्नसऊद के समान चरित्रवान् और प्रभाव शाली पुरुष ही ऐसे लोगों में, जो अपनी मस्जिदों के लिए असाधारण प्रतिष्ठा करते हैं यह काम करसका। इसके प्रमाण भातवर्ष मेंनित्य ही देखने में आते हैं इब्नसऊद से पहले वहाबी लोगों का कोई उल्लेखनीय अस्तित्व नहीं था। परन्तु अब एक के बाद दूसरी अरबों की जातियां उनके झण्डे के नीचे आ रही हैं। व्याख्यान द्वारा प्रचार वहुत दिन से वन्द हो चुका। परन्तु ऐसे लोगों में जो अपने चरित्र की भयङ्करता और कठोर कट्टरता के लिए प्रसिद्ध थे, धर्मपरिवर्तन अब भी जारी है। वैयक्तिक प्रभाव से वे आश्चर्यजनक कार्य हुए हैं जो अपने धर्म और सास्त्रों के महत्व की घोषणा से कभी नहीं हो सकते थे। इस सम्बन्ध के उदाहरण हमारे देश में भी पर्याप्त रूप में पाये जाते हैं। मेरा ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज के पुराने नेता स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपतराय आदि के जीवन का अध्ययन भी ईसी सचाई का समर्थन करता है। यही बात छोटे आदमियों के लिये भी लागू होती है। आर्य समाज के प्रत्येक प्रचारक को यह अनुभव होगा; और यदि उसका हृदय काम करना चाहता है तो वह इसी प्रकार करेगा। क्या यह नहीं कहा जाता कि प्रत्येक आर्य अपने क्षेत्र में प्रचारक है, किन्तु व्यवहार में हम क्या पाते हैं ? समाजों के मन्त्री और प्रधान ऐसा व्यवहार करते हैं मानों वह गवर्नमेंट के किन्हीं विभागों के सेक्रेटरी और मिनिस्टर हैं। सम्पत्ति और स्थान का गर्व प्रचारक की भावना का सबसे बड़ा शत्रु है - वह भावनाजिससे प्रत्येक आर्य समाजी और विशेषकर पदाधिकारी प्रेरित होने चाहिए। यह ठीक कहा जाता है कि सबसे अधिक रचनात्मक काल आर्य समाज के जीवन में वह था कि जब आर्य संख्या में थोड़े थे पर ये भावना में सच्चे। जब कि 'नमस्ते' शब्द से हृदय मिल जाते थे, जब प्रेम और सेवा की भावनाएं प्रत्येक आर्य के हृदय में निवास करती थीं। आर्य समाज की ज्वलंत कीर्ति उसी समय से सम्बन्ध रखती है। किसी जाति या वर्ग के लिये वह दुर्दिन ही कहा जायगा जब कि वह अपनी पिछली कीर्ति को गाती हुई जीवित रहना चाहे और उसको बढ़ाने मे अशक्त बन जाय। आर्य समाज का ऐसा ही दुर्दिन आया प्रतीत होता है।

मैं कई वर्ष तक आर्य समाज के साथ घनिष्ट सम्पर्क में रहा हूं। कुछ वर्ष तक मैंने सार्वदेशिक सभा की ओर से अवैतनिक प्रचार किया। एक बार कलकत्ते के मेरे मित्रों ने मुझे प्रतिनिधि सभा का प्रधान भी बनाया। मैं अनेक आर्य प्रचारकों के सम्पर्क में आया और मैंने उनके प्रचार के विभिन्न ढगों को भी देखा। मेरा विश्वास है कि जिसके हृदय में मनुष्यमात्र के लिए प्रेम नहीं है, वह धर्मप्रचार के कार्य में अवश्य असफल होगा।

संपत्ति और स्थान के गर्व के अतिरिक्त एक अभिमान है काल्पनिक पवित्रता का। मैं ऐसे एक सज्जन से मिला, जो कट्टर आर्य थे और जिनका चरित्र भी आदर्श था-केवल एक वात को छोड़कर, वह है उनकी जिह्वा का विष। अनेक प्रतिष्ठित पुरुष जो दूर से उनकी ओर आकृष्ट हुए, उनके कटु शब्दों के कारण उनसे सदा के लिए दूर हो गये। वह सच्चा धर्मप्रचारक नहीं है जो यह समझता है कि एक व्यक्ति से व्यवहार करने से पूर्व हमें यह निश्चय हो जाना चाहिये कि उस व्यक्ति में मानवीय दुर्वलताएँ बिलकुल नहीं रहीं। ऋषि निर्वाण की स्मृति के इस अवसर पर आर्य समाजों को इन दोषों से रहित हो जाना चाहिये। प्रान्तीयता विरादरी और मूर्तिपूजा की ओर झुकाव तथा गुरुडम आदि ऐसे दोष हैं जो एक ऐसे समुदाय के लिये, जिसका अस्तित्व संगठन ही पर है, विषाक्त भोजन से कम हानिकारक नहीं है।

అబలలకేది అభయం ?

నోబెల్ శాంతి బహుమతి గ్రహీత

జోరున కురుస్తు వాన. రహదారి అంతా బురద మయం. ఆ వానలో తడుస్తూ, బురదమయమైన దారిలో నడుస్తూ భోపాల్ సమీపంలోని చిన్న టంటికి చేరుకున్నాం. చూరుపట్టుకొని ధారగా కురుస్తున్నవాన నీటిలో తడిసి ముద్దయిన ఆ ఇల్లు- నీరుగారని ఆత్మ గౌరవానికి ప్రతీకగా నిలిచింది. అక్కడ, బిక్కుబిక్కుమంటున్న అయిదేళ్ల పాప బిందియా (అసలుపేరు కాదు) కళ్లలో ఇంకిపోయిన కన్నీటిని చూస్తే- ఎంతటి పాషాణ హృదయమైనా కరిగిపోవాల్సిందే. మొన్న జులై నెలలో ఒక దుర్దినాన ఒక మానవమృగం అన్నెం పున్నెం ఎరుగని ఆ పాపపై అత్యాచారానికి ఒడిగట్టాడు. ఆమె తల్లిదండ్రులు ఇంకా దిగ్భ్రాంతిలోనే ఉన్నారు. భయంతో చిగురుటాకుల్లా వణికిపోతున్నారు. ఆ మానవ మృగాన్ని అరెస్టు చేయడం కాదు కదా- కనీసం అతడు ఎవరో, ఎక్కడున్నాడో కూడా పోలీసులు ఈనాటికీ కని పెట్టలేక పోయారు. మమ్మల్ని చూశాక ఆమె లిప్తపాటు నవ్వినట్లు కనిపించినా ఆ నవ్వులో జీవం లేదు. నాకేం జరిగింది, నా తప్పేమిటి అంటూ ఆ పాప కళ్లు ఇంకా గుచ్చి గుచ్చి ప్రశ్నిస్తూనే ఉన్నాయి.

* సిగ్గుచేటు...

డెబ్బయ్యో స్వాతంత్ర్య వార్షికోత్సవాలు జరుపుకొంటున్నాం. అవును, ఈ ఉత్సవాలను ఘనంగా జరుగుపుకొనవలసిందే. ఇదే సమయంలో మనం ఏదిశగా వెళుతున్నామో ఒక్కసారి ఆలోచించుకోవాలి. నిలువెత్తు అద్దంలో మనల్ని మనం ఒక్కసారి తేరిపార చూసుకోవాలి. 1947లో స్వాతంత్ర్యం సాధించిన పిమ్మట ఎన్నో ఘనవిజయాలు సాధిఇంచి ఉండవచ్చు. మరెన్నో మైలు రాళ్లు దాటి ఉండవచ్చు. కానీ, నేడు ఒకతరం భయం గుప్పిట్లో చిక్కి విలవిల్లాడుతోంది. ముఖ్యంగా చిన్న పట్టణాల్లో బడికెళ్లే ఆడపిల్లల మాన ప్రాణాలకు రక్షణ లేకుండాపోతోంది. పెద్ద పెద్ద నగరాల్లో ప్రత్యేక గృహ సముదాయాల్లో నివసించేవారు సైతం తమ పిల్లలు ఇంటికి చేరేలోగా భయాందోళనలకు గురవుతున్నారు.

ఈ రకమైన భయోత్పాత వాతావరణమే ప్రజాస్వామ్యాన్ని హాస్యాస్పదంగా మారుస్తోంది. ఏ ఉపాధ్యాయుడు ఎప్పుడు మృగాడవు తాడోనని తరగతి గదుల్లో ఆడపిల్లలు హడలిపోతున్నారు. ఇంటి దగ్గర ఉండే పార్కులు, ఆటమైదానాలకు పిల్లల్ని పంపేందుకు తల్లిదండ్రులు జంకుతున్నారు. ఎక్కడి నుంచి ఎలాంటి ఉపద్రవం వచ్చిపడుతుందోనని గజగజలాడుతున్నారు. చాలా సందర్భాల్లో దగ్గరివారు, బంధు మిత్రులు, బాగా తెలిసిన వాళ్లే పసిపాపల పట్ల కీచకులవుతున్నారు. కాలయముళ్లుగా మారుతున్నారు. ఎప్పుడూ బట్టలు కుట్టి పెట్టే దర్జీ మొదలుకొని ఐటీ వృత్తి ఉద్యోగాలు వెలగబెట్టే వారి దాకా ఎవరైనా ఆ జాబితాలో ఉండవచ్చు. ఇలాంటి మృగాళ్ల తెగ నుంచి స్వాతంత్ర్యాన్ని భారతదేశం ఇప్పుడు కోరుకుంటోంది. దేశవ్యాప్తంగా ప్రతిరోజూ దాదాపు 13 మంది పిల్లలు లైంగిక అత్యాచారాలకు గురవుతున్నారని జాతీయ నేర నమోదు సంస్థ(ఎన్సీఆర్బీ) అధికారిక గణాంకాలే వెల్లడిస్తున్నాయి. సిగ్గుతో తలదించుకోవలసిన దుస్థితి ఇది. ఇప్పటికైనా కలిసికట్టుగా కార్యాచరణకు మానుకొనకపోతే, ఇంకెప్పుడు ఆ పని చేస్తాం?

గడచిన కొన్నేళ్లుగా ఈ భయం క్రమంగా విస్తరిస్తోంది. మన పిల్లలు, తల్లిదండ్రులు ఈ భయం నుంచి విముక్తం కానప్పుడు 70 ఏళ్ల రాజకీయ స్వాతంత్ర్యానికి అర్థమే లేదు. పిల్లలపై లైంగిక హింస ఇప్పుడు పెద్ద మహమ్మారిగా మారింది. దేశాన్ని పట్టి పీడిస్తున్న అణచివేత, అన్యాయాల పట్ల నిరసన తెలపడం సులభం. కానీ, బాలలపై లైంగిక హింస విషయంలో మౌనం వహించడం దారుణం. బాధితులను, వారి తల్లిదండ్రులను సంకుచిత సామాజిక కట్టుబాట్లు అణగదొక్కుతు తల్లిదండ్రులు మౌనంగా కుమిలిపోతున్నారు.

ఫిర్యాదు చేయటానికి ముందుకు రావడం లేదు. దీన్ని పరిగణనలోకి తీసుకొన్నప్పుడు, లైంగిక దాడికి గురవుతున్న పిల్లల సంఖ్య అధికారికంగా చెబుతున్నదానికన్నా ఉంటుందనేది స్పష్టం. ఈ దురన్యాయంపై గొంతెత్తాల్సిన సమయ్ ఆసన్నమైంది. భారతదేశాన్ని ఇప్పుడు అనేక రుగ్మతలు పట్టి పల్లారుస్తున్నాయి. చట్టాలను కట్టుదిట్టంగా అమలు చేయలేకపోతున్నారు. ఇదొక పెద్ద సంక్షోభం. పౌర సమాజం, కార్యకర్తలు దశబ్దాల తరబడి పోరాడిని పరిమిలా పోక్సో (పీఓసీఎస్ఓ లైంగిక నేరాల నుంచి బాలల రక్షణ) చట్టం 2012లో సాకారమైంది. కానీ తల్లిదండ్రుల్లో భయాన్ని పోగొట్టి, భరోసా ఇచ్చే రీతిలో దాన్ని అమలుచేస్తున్నారా ? లేదు. ఇందుకు ఒక ఉదాహరణ 2013 ఏప్రిల్‌లో దేశ రాజధాని ఢిల్లీలో జరిగిన ఘటన గుడియా అనే అమ్మాయి ఎంతకీ ఇంటికి తిరగిరాలేదు. దాంతో ఆ పేద తల్లిదండ్రులు సహాయం కోసం పోలీసులను ఆశ్రయించారు. కానీ, పోలీసులు వారిని తన్ని తరిమేశారు. కొన్ని రోజుల తరవాత పొరుగు వీధిలోని ఒక ఇంట్లో ఆమె కొనఊపిరితో కనిపించింది. ఎవరో ఆమె మీద దారుణంగా అత్యాచారానికి పాల్పడి, హింసించి, వదిలేసి వెళ్లారు. ఆ దురాగతానికి పాల్పడిన ఇద్దరిని పోలీసులు అరెస్టుచేసి, విచారణ ప్రారంభించారు విచారణ మొదలయ్యాక నాలుగేళ్ల తరవాత ఒక నిందితుణ్ని బాలనేరస్తుడిగా తేల్చారు. అంటే శిక్ష లేనట్లేనన్నమాట. ఇప్పటికీ విచారణతంతు కొనసాగుతూనే ఉంది. కొత్త జీవితాన్ని నిర్మించుకొనేందుకు గుడియాకు, ఆమె తల్లిదండ్రులకు సహాయపడ్డాం. కానీ, వారి నేటికీ భయంభయంగానే బతుకుతున్నారు.

ఇకనైనా పటిష్ఠ కార్యాచరణ

మనుషుల అక్రమ రవాణా ఒక సంఘటిత నేరం. దానికి, బాలల మీద అత్యాచారాలకు లంకె ఉంది. దేశంలో ఏటా దాదాపు లక్ష మంది బాలలు అదృశ్యమవుతున్నట్లు అంచనా. వారిలో సగం మంది ఆచూకీ తెలియడం లేదు. వారిలో అత్యధికులు లైంగిక బానిసలుగా మారిపోతున్నారు. సహజంగానే వారంతా పేద పిల్లలే. ఈ ఏడాది వరదలతో సర్వం కోల్పోయిన పశ్చిమ బంగ, అసోమ్‌లలోని పేద కుటుంబాలను అక్రమ రవాణా దారుల ముఠాలు లక్ష్యంగా చేసుకొన్నట్లు వస్తున్న వార్తలు ఆందోళన కలిగిస్తున్నాయి. అక్రమ రవాణాదారుల ఆట కట్టించడానికి గట్టి చట్టం తీసుకురావాలంటూ అనేక ఏళ్లుగా పోరాడుతున్నాం, అయినా సాధించలేక పోతున్నాం.

ఒక సమాజంగా మనమంతా దీనిపై పటిష్ఠ కార్యాచరణతో ముందుకు వెళ్లాల్సి ఉంది. చట్టాన్ని అమలు చేసే సంస్థలు, అధికారులు ఈ విషయంలో సానుకూలంగా స్పందించాలి. వారికి జవాబుదారీతనాన్ని మప్పే మార్గాలను మనం కనుగొనాలి. ఈ బాలలను మళ్లీ మామూలు మనుషులుగా చేసేందుకు ముమ్మరంగా ప్రయత్నించాలి. లైంగిక అరాచకవాదుల నుంచి ఎదురయ్యే ప్రమాదాల గురించి తెలియజెప్పేందుకు అన్ని పాఠశాలల్లో లైంగిక విద్య నేర్పాలి. లైంగిక విషయాల్లో సందేహాలు తీర్చి, భయానుమానాలు పారదోలేందుకు వీలుగా తల్లిదండ్రులు, కుటుంబ సభ్యులు పిల్లలతో స్నేహితుల తరహాలో వ్యవహరించడం మరింత ముఖ్యం ఈ 70వ స్వాతంత్ర్య వార్షికోత్సవాల సందర్భంగా బాలలకు మనం ఇచ్చే అపూర్వ బహుమానం. భయంలేని వాక్ స్వాతంత్ర్యం. బాలలు ఎన్నో కలలు కంస్తుంటారు. వారు వాటిని సాకారం చేసుకొనే భద్రమైన భారతదేశాన్ని నిర్మిద్దాం!

आर्य समाज बिचकुंदा, ध्रुवपेट, उम्दा बाजार व दयाल बाउली श्रावणी पर्व समापन के दृश्य

జన్మ పునర్జన్మ

మంచివాళ్లకు వెంటనే మానవ జన్మ వస్తుందా? అని కొందర డుగుతుంటారు. మంచి వాళ్లకు మానవ జన్మ లభిస్తే చెడ్డవాళ్లకు ఇతర జన్మలు సంప్రాప్తమవుతాయని వారి అభిప్రాయం. నిజానికి మనం ఏ జన్మ ఎత్తేది మన చేతిలో లేదు. ఆయువు, భోగం, జన్మ ఈ మూడిం టికి అధినాథుడు దేవుడే. ఏ జన్మ ఎత్తి, ఎంత కాలం, ఆ జన్మలో సుఖ దుఃఖాలు అనుభవించాలో ఏ మానవునికీ ఇంతవరకు తెలియదు. జన్మకు కారణం ప్రవృత్తులు. ప్రవృత్తులనగా మనోవాక్కాయాలతో చేసే పనులు. అవి మంచివి కావొచ్చు. చెడ్డవి కావొచ్చు. మంచి పనులను పుణ్య కర్మలని, చెడ్డ పనులను పాప కర్మలని పిలుస్తారు. ఐతే అవి ఏ కర్మలైనా జన్మకు కారణమయ్యేవే. ఐతే జన్మ లేకుండా చేసుకోవడానికి శుభాశుభ కర్మలకు దూరంగా ఉండాలా? అనే ప్రశ్న కలుగుతుంది. కర్మలు చేయకుండా ఉంటే దేవుడొప్పుకోడు. ఎవడే కర్మ చేయకుండా సోమరిపోతవుతాడో, అతడు నాకు శత్రువు అని వేదం ఘోషిస్తున్నది. కనుక మనిషైనవాడు ఆలోచించి, కర్మ చేయక తప్పదు.

జన్మించినప్పుడు కర్మలు చేయక తప్పదు. కాని జన్మ నుంచి విముక్తి పొందడానికి కర్మలే విధంగా తోడ్పడుతాయి? అనేది మరొక ప్రశ్న. దానికి సమాధానంగా భగవద్గీతలో కర్మ సంన్యాస యోగం చెప్పబ డింది. కర్మ సన్న్యాసం అంటే పనిని విడిచిపెట్టడం కాదు. ఆ పని వల్ల కలిగే ఫలితాన్ని ఆశించకుండా ఉండడం. మరి ఇది ఎంతమందికి సాధ్యమవుతుంది? ఔను, ఎవరు జన్మ లేకుండా చేసుకోవాలనుకుం టారో, వారు కర్మఫలాన్ని ఆశించరు. ఒక విధంగా అది భగవంతునికి అర్పించినట్టే.

మనం ఒక పని చేసినప్పుడు ఆ పని మన మీద ఒక ముద్ర వేస్తుంది. దాన్నే సంస్కారం అంటారు. భవిష్యత్తులో మనం చేసే పనుల సంస్కా రాల ప్రభావం ఉంటుంది. సంస్కారాల రూపంలోని మంచి పనులు మనకు మంచి భవిష్యత్తును ప్రసాదిస్తే, చెడ్డ పనులు దుఃఖానికి దారి తీస్తాయి. ఇదే కర్మ సిద్ధాంతం.

సాధారణంగా ఫలాపేక్ష లేకుండా కర్మలు చేసేవారు మళ్లీ జన్మించాల నుకోరు. భౌతిక జీవనం కంటే, మళ్లీ ఆయా లోకాలలో జన్మించడం కంటే ముక్తిని పొందడమే గొప్పగా భావిస్తారు. దీన్నే యోగులు ఆధ్యా త్మిక ప్రగతి అంటారు.

ఇహలోక సుఖాలకై వెంపర్లాడేవారు, ఇంకా సుఖపడాలనుకునేవారు పునర్జన్మ వైపు మొగ్గు చూపుతారు. కాని మహాత్ములెన్నడు కూడా పున ర్జన్మకిష్టపడరు. మంచి సంస్కారాలు కలిగిన ఆత్మలు కూడా పునర్జన్మ కోసం ఎదురుచూస్తాయి. కాని తొందరపడవు. ఎట్లాగూ చెడు సంస్కా రాలు కలిగినవారికి వెంటనే జన్మలు సంప్రాప్తమవుతాయి.

మహాత్ములెప్పుడూ పునర్జన్మ లేకుండా చేసుకునే పనిలో నిమగ్నమవు తారు. పూర్వజన్మ సంస్కారాల వల్ల మంచి చెడ్డలను బేరీజు వేసుకుం టారు. వారికి పునర్జన్మ ఇచ్చేది భగవంతుడే. అందుకు ఒక్కొక్కసారి వందల యేళ్లు, వేల యేళ్లు పట్టవచ్చు. అంతవరకు వారు పితృలో కంలో ఉండవలసిందే. అనుకూల పరిస్థితులను బట్టి భూమి మీద మానవులుగా జన్మిస్తారు. ఈ విధంగా జన్మించిన పుణ్యాత్ములనే అవ తార పురుషులుగా లెక్కిస్తారు.

భగవంతుణ్ణి తెలుసుకోవాలంటే నిన్ను నీవు తెలుసుకో. అంటారు గ్రీకు వేదాంతులు. కాని 'నిన్ను నీవు మరిచిపో' అంటారు భారతీయ ఆధ్యా త్మికవేత్తలు. ఎంతకాలమని మనిషి తనను తాను తెలుసుకుంటాడు? ఒకరోజు తెలుసుకొని తెలుసుకొని ఆగిపోవలసిందే. అందుకే 'మనల్ని మనం మరిచిపోతేనే భగవంతుణ్ణి కనుగొనగలం. అని భారతీయ తత్వ శాస్త్రం బోధిస్తుంది. జన్మ, పునర్జన్మ, మోక్షం ఈ మూడింటికి అధికారి భగవంతుడే అన్న విషయం ఎన్నటికీ మరువరానిది.

పునర్జన్మ లేకుండా చేసుకోవడానికి భగవంతుణ్ణి ఆశ్రయించక తప్పదు. కాని భగవంతునికి రూపం లేదు కదా. అతణ్ణి ఏ విధంగా పట్టుకోవడం? వన్నీ ప్రశ్న చాలామంది అడుగుతుం టారు. దానికి నేను ఉపనిషత్తుల ఆధారంగా తెలిసినదాన్నే వారికి విన్నవిస్తాను. సత్యాన్ని ఆశ్రయిస్తే భగవంతుడు దొరుకు తాడని నా సమాధానం. సత్యమంటే నిజం. నిజమే చెప్పడం ఆరంభిస్తే మనకు భగవంతుడు సులభంగా లభిస్తాడు. మాటకు ప్రాణం సత్యమని అనుభవజ్ఞుల మాట. మరి సృష్టికి ప్రాణం వంటి వాడు భగవంతుడే కదా.

- మసన చెన్నప్ప

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-09-2017 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor: Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax : 040-24557946
Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి సభ

To,
Swa i ... ra. Saraswati
Sa ... ir.
a: ma ... w Delhi

सुरक्षित बचपन - सुरक्षित भारत

सुप्रसिद्ध समाज सेवी नोबेल पुरस्कार ग्रहिता कैलाश सत्यार्थी द्वारा बचपन बचाओ आंदोलन की यात्रा कन्याकुमारी से कश्मीर तक ११ सितम्बर से १६ अक्तूबर तक कन्याकुमारी के विवेकानंद स्मारक से भारत यात्रा निकाली जा रही है। यात्रा विभिन्न राज्यों से होते हुए २१ सितंबर को हैदराबाद पहुँचेगी और १६ अक्तूबर को नई दिल्ली में यात्रा का समापन होगा ।

श्रद्धांजली

डॉ. हरिश्चन्द्र विद्यार्थी आर्य समाज के प्रबल प्रवक्ता थे । अंतिम सांस तक समाज और देश हित में कुछ कर गुजरने की तडप उनमें थी । हमारे बीच में से उनका चले जाना, आर्य समाज एवं हिंदी प्रेमियों के लिए अपूरणीय क्षति है । आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना की ओर से
विनम्र श्रद्धांजली

निमंत्रण

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में हैदराबाद मुक्ति संग्राम दिवस दि. १७ सितम्बर २०१७ प्रातः ८-०० बजे आंध्रा बैंक कोठी स्थित पंण्डित नरेन्द्र प्रतिमा के पास बृहद यज्ञ एवं जनसभा आयोजित कर मुक्ति संग्राम के अमर शहीदों को श्रद्धांजली अर्पित की जाएगी । उक्त कार्यक्रम में नगर द्वय के स्वतन्त्रता सेनानी, राजनेता व आर्य विद्वान अपना अमूल्य संदेश देंगे । अतः नगरद्वय के सभी आर्य समाजों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से निवेदन है कि ठीक समय पर अधिक से अधिक संख्या में सोल्लास उपस्थित होकर, कार्यक्रम को सफल बनाएँ ।

अपील

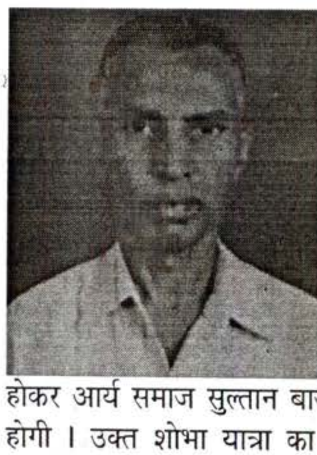

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान एवं आर्य समाज किशनगंज के सौजन्य से, प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी दि. ३० सितम्बर २०१७, शनिबार सायं ४-०० बजे विजया दशमी पर्व पर ऐतिहासिक शोभा यात्रा आर्य समाज किशन गंज से आरम्भ होकर आर्य समाज सुल्तान बाजार में जन सभा में परिवर्तित होगी । उक्त शोभा यात्रा का नेतृत्व श्री मादम दशरथ जी रथारुढ़ होकर करेंगे ।

अतः नगरद्वय के सभी आर्य समाज व स्वयं सेवी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से निवेदन है कि ठीक समय पर अधिक से अधिक संख्या में सोल्लास उपस्थित होकर, कार्यक्रम को सफल बनाएँ ।

भवदीय

डा. लक्ष्मण सिंह	**हरिकिशन वेदालंकार**	**विट्ठल राव आर्य**
प्रधान सभा	संयोजक	मंत्री सभा

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor : Vithal Rao Arya • Email : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691
సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, మంత్రి సభ, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठलराव आर्य, मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.